ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

हिन्दी मासिक मुख पत्र

मास–मार्गशीर्ष–पौष, संवत् 2072

दिसम्बर 2015

अंक 124, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

पं. रामप्रसाद बिस्मिल

भाई परमानन्द आर्य

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

किसी अनागत की प्रतीक्षा में बैठना
मुँह ढांक कर सोने से अच्छा है ।
कल्पना करना, लक्ष्य की ओर बढ़ना
जीवन को बेकार खोने से अच्छा है ॥

'योग से व्यसन की मुक्ति' अभियान के तहत छत्तीसगढ़ में वेदप्रकाश शर्मा साथ में सभा के पदाधिकारीगण महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना में

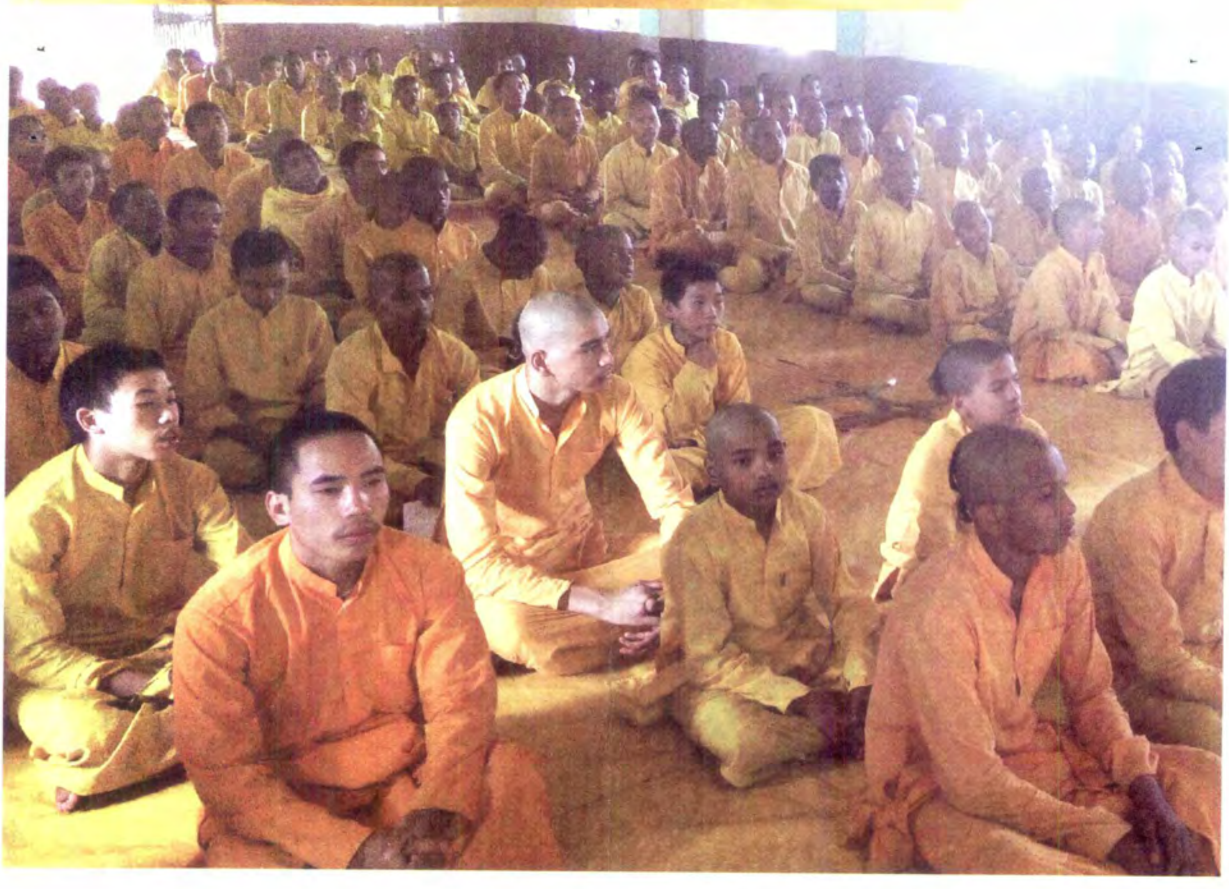

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७२
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११६
दयानन्दाब्द - १९१

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष - ११, अंक ६ ओ३म् मास/सन् - दिसम्बर - २०१५

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सद्मसद्मकम्,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : ऐश्वर्य का रथी	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : आदर्श नेता–स्वामी श्रद्धानन्द	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	वेद एवं सांसारिक अध्यात्म	डॉ. सत्यपाल सिंह	०८
४.	आर्ष योग की सातवीं सीढ़ी–"ध्यान"	आचार्य आर्यनरेश	११
५.	'महर्षि दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश और आर्यसमाज मुझे क्यों प्रिय है'	श्री मनमोहन कुमार आर्य	१३
६.	यह नाराजगी किस पर और क्यों ?	श्री ओमप्रकाश बजाज	१७
७.	घरेलू गुस्से का एक दिन	श्री देवेन्द्र कुमार मिश्र	१८
८.	स्वामी श्रद्धानन्द जी सामाजिक क्षेत्र में	महात्मा चैतन्यमुनि	२०
९.	अमर शहीद : पं. रामप्रसाद बिस्मिल	श्री जगतराम आर्य	२३
१०.	पुण्य स्मरण : भाई परमानन्द	डॉ. भवानीलाल भारतीय	२६
११.	होमियोपैथी चिकित्सा से प्रोस्टेट ग्रन्थि का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२९
१२.	कविता : महंगी दुनिया	श्री विनोद कुमार पण्डा	३०
१३.	कविता : पहले मुझको गोली मारो	श्री दयाशंकर गोयल	३०
१४.	समाचार दर्पण		३१

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

ऐश्वर्य का रथी

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

त्वं नश्चित्र ऊत्या, वसो राधांसि चोदय।
अस्य रायस् त्वमग्ने रथीरसि, विदा गाधं तुचे तु नः ॥ ऋग्. ६.४८.०९

ऋषिः शंयु, बार्हस्पत्यः (तृणपाणिः)। देवता अग्निः। छन्दः ककुस्मती भुरिक् अनुष्टप्।

● **(वसो)** हे धन-स्वरुप परमेश्वर! **(चित्रः)** अद्भुत गुण, कर्म, स्वभाववाला **(त्वं)** तू **(नः)** हमारे लिए **(ऊत्या)** (अपनी) रक्षा से **(राधांसि)** ऐश्वर्यों को **(चोदय)** प्रेरित कर। **(अस्य)** इस **(रायः)** ऐश्वर्य का **(त्वं)** तू **(अग्ने)** हे अग्नि-स्वरुप परमात्मन्! **(रथीः)** रथ-चालक, नेता **(असि)** है, **(नः)** हमारी **(तुचे)** सन्तान के लिए (तु) शीघ्र **(गाधं)** प्रतिष्ठा को **(विदाः)** प्राप्त करा।

हे जगदीश्वर! तुम वसु हो, हम निर्धनों के धन हो, दीन-हीन अवस्था से हमारा उद्धार करने वाले हो। तुम चित्र हो, अद्भुत गुण-कर्म-स्वभाववाले हो। तुम जैसा गुणी, तुम जैसा सुकर्मा, तुम जैसा धीर-वीर-शान्त स्वभाववाला जगतीतल में अन्य कोई नहीं है। जो एक बार तुम्हारी झांकी पा लेता है, वह तुमपर मुग्ध हो जाता है। उसके मुख से सहसा तुम्हारे लिए ये शब्द निकल पड़ते हैं - अद्भुत! आश्चर्यजनक! विस्मयकारी! हे भगवन्! तुम ऐश्वर्य के रथी हो, चालक हो, ऐश्वर्य-रथ को लिये फिरते हो, और जिन्हें ऐश्वर्य की आवश्यकता है, चाह है, उन्हें ऐश्वर्य बांटते जाते हो। तुम जिसे अपनी रक्षा में ले लेते हो उसकी सब चिन्ता तुम स्वयमेव करते हो, उसे अपनी चिन्ता करने का कष्ट नहीं उठाना पड़ता है। हे प्रभुवर! हमें भी तुम अपनी रक्षा में ले लो, और हमारे प्रति ऐश्वर्यों को प्रेरित करते चलो। किस अवस्था में कौन से ऐश्वर्य हमारे लिए कल्याण कर होंगे, यह भी तुम स्वयं ही देखो, क्योंकि जब हमारी रक्षा की डोर तुमने पकड़ ली, तो क्या हमारे लिए हितकर है और क्या अहितकर इसके निर्णायक हम नहीं होना चाहते। हम तो इतना ही जानते हैं कि सोना-चांदी, धन-दौलत को भी ऐश्वर्य कहते हैं, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को भी ऐश्वर्य कहते हैं, सद्गुणों को भी ऐश्वर्य कहते हैं, सुख-शान्ति को भी ऐश्वर्य कहा जाता है और मानव जाति की आध्यात्मिक निधि भी ऐश्वर्य कहाती है। इनमें से जिस ऐश्वर्य का भी हमारे पास अभाव है और अपने समुचित विकास के लिए हमें उसकी आवश्यकता है, वह ऐश्वर्य तुम हमें प्रदान कर दो।

हे दीनबन्धु! हमारी तुमसे यह प्रार्थना भी है कि तुम हमारी सन्तान को प्रतिष्ठा प्राप्त कराओ। ऐश्वर्य, प्रतिष्ठा आदि वंशानुक्रम से विरासत में प्राप्त होकर आगे-आगे चलते रहने चाहिए। अन्यथा यदि हम तो ऐश्वर्यवान् और प्रतिष्ठित हो गये, किन्तु हमारी सन्तानें ऐश्वर्य-हीन तथा प्रतिष्ठा-हीन रही, तब तो हमारे बाद ऐश्वर्य और प्रतिष्ठा का अन्त हो जायेगा। हम तो चाहते हैं कि यह परम्परा अविच्छिन्न रुप से चलती रहे, तभी जगत् के वर्तमान और भविष्य दोनों को ऐश्वर्यवान् एवं प्रतिष्ठावान् बनाने का हमारा लक्ष्य पूर्ण हो सकता है। हे प्रभु! इस लक्ष्य-पूर्ति में हम तुम्हारे सहायक बनो।

संस्कृतार्थ :- १. राघस् धन (निघं. २.१०)। २. तुच् सन्तान (निघं. २.२)। ३. गाधं प्रतिष्ठां तु शिप्रं विदाः लभ्भय (सायण)।

सम्पादकीय

आदर्श नेता - स्वामी श्रद्धानन्द

23 दिसंबर को जिनका बलिदान दिवस है:- *भारतीय स्वतंत्रता में अग्रणी भूमिका निभाने वाली संस्था आर्यसमाज के अग्रगण्य महापुरूषों में जिनका पुण्य स्मरण किया जाता हो, महान देशभक्तों की प्रथम पंक्ति में जिनका नाम श्रद्धा से लिया जाता हो, जो अखिल भारतीय कांग्रेस के संकट मोचक माने गये हों, मोहनदास करमचन्द गाँधी को महात्मा बनाने वाले तथा शुद्धि आन्दोलन के प्रखर प्रणेता होने के बावजूद भी जिन्हें साम्प्रदायिक सौहार्द में अग्रणी मानकर दिल्ली के जामा मस्जिद की मिम्बर से मुसलमानों को देशभक्ति के लिए प्रेरित करने को आमंत्रित किया गया हो, अंग्रेज सरकार से बहादुरी पूर्वक टक्कर लेने वाली छबि और सिद्धान्तों की तारीफ के पुल बाँधता हो, 1868 ई. में जिस महान् व्यक्तित्व ने अल्प समय में ही उस समय की विशाल धनराशि 30,000/-रूपये दान स्वरूप संग्रह के साथ-साथ लगभग 1800 बीघे का पूरा गांव राष्ट्र महायज्ञ के लिए आहूत करके जिसने ऋषि ऋण चुकाने की पावन परंपरा का निर्वाह किया हो, ऐसे अमर हुतात्मा के जीवन से प्रेरणा लेकर आइए हम भी अपना जीवन धन्य करें।*

1. आदर्श शिक्षा के उन्नायक:-

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत प्रकृष्ट चिंतन था इसलिए उन्होने छात्रों को विद्वान् मनीषी तथा ब्रह्मचारी बनाने के लिए बीसवीं सदी के आरंभ में अपने गुरुवर ऋषि दयानन्द के आदर्शों के अनुरूप गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का इस आधुनिक युग मे सर्वप्रथम सूत्रपात किया। गुरूकुल तो स्वामी जी के बाद भी खुले तथा आज भी चल रहें हैं। तथापि उनका क्षेत्र बहुआयामी न होकर केवल कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित है। आज अधिकांश गुरूकुलों की यही स्थिति है। यद्यपि आज गुरूकुल कांगड़ी में पर्याप्त परिवर्तन आ गया है उस समय की विद्वत्ता तथा कर्मठता नहीं रह गई है।

2. स्वच्छ राजनीति केपोषक :-

इन कार्यों के साथ-साथ स्वामी जी तात्कालिक राजनीतिमें भी प्रमुख भूमिका निभाते रहे। स्वामी जी राजनीति में किसी पद के लिए नहीं गये थे, अपितु इसके माध्यम से समाज सुधार के लिए गए थे। आज सर्वत्र व्याप्त भ्रष्टाचार की राजनीति किससे छिपी है। वे राजनीति में भी नैतिकता तथा धार्मिकता चाहते थे। इसलिए उन्होने लिखा था कि आज ऐसे धार्मिक दल की आवश्यकता है, जो दुसरों को धोखा देना भी वैसा ही पाप मानता हो जैसा कि अपने आपको धोखा देना। आर्य समाज ने राष्ट्रीय क्षेत्र में राजनीति को छोड़ दिया यह न तो आर्यसमाज के लिए शुभ रहा तथा न ही देश के लिए। राजनीति से दूर रहकर आप स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित चक्रवर्ती साम्राज्य कैसे प्राप्त कर सकते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का दृष्टिकोण इसी सकारात्मक चिंतन पर आधारित था

3. सत्य के पुजारी :-

स्वामी श्रद्धानन्द सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के परम उपासक थे अज्ञान की अवस्था में उनका जीवन विपरीत दिशा की ओर बढ़ता रहा। किन्तु आँख खुलते ही उन्होनें अपने दोषों को उसी प्रकार दूर फेंक दिया जैसे कि कोई गले में पड़े विषधर सर्प को स्वामी जी का सत्य के प्रति कितना आग्रह एवं आदर था कि संन्यास लेते समय **पुत्रैषणा वित्तैषणा लोकैषणा मया परित्यक्ता** बोलते समय अन्त में बोल उठे **लोकैषणा तु मया न परित्यक्ता** है कोई समाज में मिलेगा इतना स्पष्टवादी यथार्थचिंतक ? प्रभु भक्ति एवं मृत्यु से अभय तो स्वामी जी को अपने गुरु ऋषि दयानन्द से ही प्राप्त हुए थे। प्रभुभक्त निश्चित ही मृत्यु से अभय रहता है। ऋषि दयानन्द अपने आप को तोप के मुख के आगे बांध देने पर भी तथा कोई उनकी अंगुलियो को बत्ती बनाकर जला देने से भी सत्य को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे तो उनका शिष्यनिर्भीक संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द भी गोरे सैनिकों की संगीनों के समाने शान्त भाव से सीना खोलकर तान देते हैं और ललकारते हुए कहते हैं -**सन्यासी का सीना खुला है हिम्मत हो तो चला दो गोली**। यही है मृत्यु को जीतना, ऐसे व्यक्ति ही मृत्युञ्जय कहलाने के पात्र होते हैं।

4. राष्ट्रीय एकता के पक्षधर :-

स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन में भी अधिक आश्चर्यजनक घटना 4 अप्रैल 1919 को हुई ऐसी घटना न भूतकाल में हुई न भविष्य में होने की संभावना ही है। मुस्लिम नेताओं के आदेश से दो प्रतिनिधि स्वामी श्रद्धानन्द के निवास पर पहूँचे। उन्हें सविनय निवेदन के बाद ससम्मान गाड़ी पर बैठाकर जामा मस्जिद लाए। प्रधान मौलवी सहित सभी मुसलमानों ने जयघोष के साथ

स्वागत किया और नम्र निवेदन किया कि वर्त्तमान विकट समय में मुसलमानों को कर्त्तव्य का उपदेश करें। वेदी पर विराजमान स्वामी श्रद्धानन्द जी ने निम्न समयोपयोगी महत्वपूर्ण चिंतन एक वेद मंत्र के माध्यम से जनसमुदाय को सम्बोधित किया। **त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ अधाते सुम्नमीमहे** । जिसका अर्थ है- हे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक कृपालु परमात्मन् आप हमारे पिता के सदृश पालक हो ममतामयी माता के समान अनेक प्रकार से हमें सुख प्रदान करते हुए हित चिन्तक हो आपकी छत्र छाया में हमें परम सुख मिलता है । इस प्रकार आपने जामामस्जिद के पवित्र मंच से वेद मन्त्रों द्वारा एकता का सन्देश दिया। राष्ट्रीयता एवं निर्भीकता के कारण ही पंजाब के अमृतसर नगर में उस स्थिति में जबकि जनता जलियांवाला काण्ड से अत्यंत त्रस्त थी , स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अधिवेशन सम्पन्न कराने का अद्‌भूत साहसिक कर्त्तव्य सफलता पूर्वक निभाया था।

उपसंहारः-

इस प्रकार राष्ट्रीय एकता के प्रबल पक्षधर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आजीवन भारतीय समाज में फैली हुई सामाजिक विषमता के विरुद्ध सदैव महती भूमिका निभाई अस्पृश्यता निवारण के लिए उन्होंने ऐसे आदर्श समाज के सामने उपस्थापित किये आज उसका उदाहरण मिलना भी असंभव है। अपनी परंपरागत उपासना पद्धति एवं राष्ट्रीय अस्मिता का परित्याग कर जो भूले भटके भाई-बहन अपनी मूलधारा से बहुत दूर जा चुके थे। उन्हें अपने पूर्व गौरव और महानता का परिचय प्रदान कर अपने गले लगाया। ऊंच-नीच की गंभीर खाई को पाटने में उस राष्ट्र संत ने जो अनुपम प्रयत्न किए उन्हें चन्द पंक्तियों में समेटना सर्वथा असंभव है। धार्मिक रूढ़िवादिता को सदा के लिए परिसमाप्त कर भारतीय समाज को पूर्व कालीन ऋषि युग का स्मरण करा कर वैदिक विचारधारा का प्राण प्रण से प्रचार करते हुए धर्म के शुद्ध स्वरूप को जनता के सामने रखा। जातिवाद को स्वामी जी स्वस्थ समाज के लिए घोर कलंक मानते थे, यही वजह है उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी(अब विश्वविद्यालय) में पहले आचार्य कक्षा पढ़ते तक किसी बालक की जाति का ज्ञान किसी को हो नहीं पाता था। भेदभाव से कोसों दूर स्वामी जी का व्यक्तित्व इतना महान था कि वे अपने जीवन काल में ही गरीबों के मसीहा माने जाते थे। सुधारवादी आन्दोलन के कारण दिग् दिगंत में फैल रही स्वामी जी की कीर्ति से असंतुष्ट होकर षड़यंत्रकारियों द्वारा एक मदान्ध मुसलमान के हाथों स्वामी जी 23 दिसंबर 1926 को शहीद हो गये। आइये इस अवसर पर संकल्प लें, कि हम राष्ट्रीय अस्मिता की सुरक्षा के लिए यावज्जीवन प्रयत्न करते रहेंगें यही उस महान आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

- आचार्य कर्मवीर

वैचारिक

वेद एवं सांसारिक अध्यात्म

डॉ. सत्यपाल सिंह, आई.पी.एस.

विश्व के इतिहास में वेद प्राचीनतम् पुस्तक है तथा भारतीय संस्वृति के अनुसार वेद अपौरुषेय तथा ईश्वरीय ज्ञान है। शब्द नित्य है इसीलिये इसे अक्षरों से बना मानते हैं अक्षर का अर्थ है जिसका नाश न हो। आधुनिक विज्ञान के हिसाब से ऊर्जा का नाश नहीं होता उसका सिर्फ रुपान्तर होता रहता है। ज्ञान भी इस तरह से एक ऊर्जा है। इस ज्ञान का मूल स्रोत ईश्वर है। उदाहरणार्थ हमने पढ़ना लिखना किसी गुरु से सीखा, हमारे गुरु ने अपने गुरु से... इस प्रकार पीछे जाते हुए जब दुनियां में धरती पर प्रथम मानव ने जन्म लिया तो उसका गुरु तब केवल ईश्वर ही हो सकता है। योग दर्शनकार कहता है :

सः पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।

अर्थात् ईश्वर काल की मर्यादा से परे मानव का सर्वप्रथम गुरु है। ईश्वर को ज्ञान देने के लिए बोलने की अथवा आने जाने की जरुरत नहीं हैं - वह तो हृदय में ज्ञान का प्रकाश देता है। अलग-अलग चारों वेदों का चार ऋषियों (अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा) की आत्माओं में एक साथ ही प्रकटन हुआ।

वेद का ज्ञान सार्वकालिक, सार्वभौमिक, वैज्ञानिक तथा कल्याणकारक है। वेदों में किसी ऐतिहासिक देश, जाति, धर्म, जगह तथा नाम का वर्णन नहीं है। उस पर मानव मात्र बराबर का अधिकार है। वेद संसार की सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। मनु भगवान् उसे **"सर्व ज्ञान मयो हि सः"** (१/१२६) अर्थात् सब प्रकार के ज्ञान से पूर्ण मानते हैं। अथर्ववेद घोषणा करता है -**"यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरुपाः"** (४/३५/६) अर्थात् विश्व का रुप वेद में निहित है और इसलिए प्राचीन काल से ही वेदों का पढ़ना-पढ़ाना व सुनना-सुनाना आर्य संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहा है। वेद विहित कर्मों को ही आर्यों ने धर्म का नाम दिया था।

'आर्य' शब्द का अर्थ श्रेष्ठ है, ज्ञानवान् है। 1आर्यः ईश्वर-पुत्रः2 अर्थात् ईश्वर के पुत्र को आर्य कहा गया है। इस देश में अंग्रेजों के आने से पहले 'आर्य' शब्द कहीं भी किसी जाति अथवा नस्ल के लिए प्रयोग नहीं हुआ। यह तो विदेशी इतिहासकारों तथा उनके देशीचाटुकारों के राजनैतिक तथा सांस्कृतिक षड़यन्त्र के कारण हुआ। बौद्धों का आर्य सत्य किसी जाति का सत्य नहीं अपितु मनुष्य मात्र का श्रेष्ठ सत्य है। इसी प्रकार 'आर्य' संबोधन किसी जाति के लिए न होकर आदर के लिये प्रयोग होता था। रामायण तथा महाभारत के जमाने में आर्यपुत्र तथा आर्यपुत्री का प्रयोग सामान्य था। कवि कालिदास के **'आभिज्ञानशाकुन्तलम्'** में शकुन्तला दुष्यंत को आर्यपुत्र कहती है, 'आर्य' का व्यवहार श्वसुर के लिए तथा 'आर्या' का सास के लिए आदर के लिए होता था। जब दुष्यंत शकुन्तला को पहचानने से इंकार कर देता है तो शकुन्तला उसी दुष्यंत को 'अनार्य' कहती है। यदि दुष्यंत आर्य नस्ल का होता तो क्या व्यक्ति एक ही वर्ष के अन्दर अपनी नस्ल बदल सकता है?

ऋग्वेद ने तो ईश्वरीय घोषणा की है - **'अहम् भूमिमाददाम् आर्याय'** (४/२६/२) भगवान् ने तो यह धरती आर्य के लिए ही दी है। इसलिये तो वैदिक संस्कृति बार बार पर उद्घोष करती रही : **'इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।'** (ऋ. ९/६३/५) अर्थात् इन्द्र (देवत्व) को बढ़ाने के लिए राक्षसों का दुष्टों का संहार करो तथा सारे विश्व को आर्य बनाओ। जब से हम लोग अपने को आर्य कहना भूल गए, हमारा अपने ही वेद शास्त्र, उपनिषद् रामायण, महाभारत, पुराण, गीता आदि संस्कृति साहित्य से नाता ही टूट गया। इनमें से किसी भी पुस्तक में भारत देश के लोगों ने अपने को हिन्दू नहीं कहा। सब जगह हम अपने को आर्य कहकर गौरवान्वित होते रहे। अगर हमारा नाम आर्य है, तो हमें श्रेष्ठ बनना ही होगा। अनार्यत्व (अनाड़ीपन, अज्ञानता) को लात मारनी होगी। हमें दुष्टों, दैत्यों, राक्षसों व रावणों का हनन करना ही होगा। जब से इस देश के लोगों ने-विदेशियों के कारण अथवा अपनी गलती के कारण अपने को बेचारा हिन्दू बना लिया, हमारी वीरता और वैभव खत्म

हो गए। पिछले लगभग डेढ़ हजार वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब से आर्यावर्त हिन्दुस्तान बन गया, हिन्दुओं का देश बन गया इस पर विदेशी जातियों के आक्रमण पर आक्रमण होने लगे। इस देश की संपत्ति को लूटा गया, विशाल व दुर्लभ साहित्य को जलाया गया और धीरे-धीरे यह देश विदेशियों का - जिसको हमारे प्राचीन साहित्य ने म्लेच्छ कहा था - गुलाम बन गया। जिस भगवत् गीता के अमृतमय उपदेश ने किंकर्त्तव्य विमूढ़ मोहग्रस्त अर्जुन को युद्ध करने के लिए खड़ा किया था-उसी गीता के करोड़ों भक्त पिछले एक डेढ़ हजार वर्षों में कायर, कमजोर, दीन-हीन, नपुंसक बन करके अपनी जिंदगी गुजारते रहे। हमारे सारे देवी देवताओं के हाथों में कोई न कोई शस्त्र है पर उनकी प्रतिदिन की पूजा भी हमें अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा न दे सकी। जो पौधा अपने मूल से उखड़ जाता है उसे वरुण देव का वर्षा जल, सूर्य भगवान् का ताप तथा मन्द शीतल समीर भी तो जीवित नहीं रख सकता। आर्य हमारा नाम था, आर्यत्व हमारा मूल था, वेद हमारा धर्म था... उससे दूर जाकर हमारा यह हाल होना ही था। अभी भी समय है कि हम अपने को फिर से आर्य कहकर पुनः गौरवान्वित हों।

मानव जीवन की सारी विधाएँ व विद्याएं वेदों के अन्दर बीज रुप से विद्यमान है। मनुष्य जीवन के चारों पुरुषार्थों - धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का ज्ञान तथा उन्हें प्राप्त करने का मार्ग वेद ने बताया है। अध्यात्म का अर्थ मोक्ष प्राप्ति नहीं है - मोक्ष भी अध्यात्म का एक भाग है। अध्यात्म तो एक मार्ग हैं जहां हम अपने को जान पाते हैं, या जान सकते हैं। अध्यात्म आत्म तत्व के साक्षात्कार का देवत्व प्राप्ति का महामार्ग है। हम कौन है, कहां से आए हैं, कहां जाना है, आदि प्रश्नों का उत्तर अध्यात्म का विषय है। वेद कहता है।

ओ३म् कोऽसि, कतमोऽसि, कस्यासि, को नामाऽसि।

अर्थात् तू कौन है, मैं कौन हूँ ? तू कौन सा है, मैं कौन सा हूँ? तू किसका है, मैं किसका हूँ ? तू क्या नाम या शक्ति वाला है, मैं क्या सामर्थ्य वाला हूँ ? वेद अपनी आत्मा तथा विश्व आत्मा को जानने की बात करता है। वेद का अध्यात्म तो वनों पर्वतीय कन्दराओं का अध्यात्म नहीं है। वैदिक अध्यात्म मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष की बात करता है। इसीलिये मैं उसे सांसारिक अध्यात्म कहता हूँ। उदाहरण के लिए हम वेद भगवान् से प्रार्थना करते हैं -

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।
मह्यम् दत्त्वा ब्रजत ब्रह्मलोकम् ॥

अर्थात्, हे संस्कारित लोगों को पवित्र करने वाली वेद माता मुझे वर दो ताकि मैं लम्बी आयु, बल (प्राण शक्ति), उत्तम संतान-पशु आदि यश, धन, ब्रह्म (वेद) ज्ञान पाकर ब्रह्मलोक (मोक्ष-प्राप्ति) का अधिकारी बन सकूं। वेद के एक-एक पद में एक-एक शब्द में, एक-एक अक्षर में उनके क्रमों में बड़ा विज्ञान निहित है। शास्त्र ने घोषणा की **"बुद्धिपूर्वा वाक्य कृतिर्वेदे"**। अर्थात् वेद का प्रत्येक वाक्य बुद्धिपूर्वक है। मनु महाराज तो वेदों को परम प्रमाण मानकर कहते हैं : धर्म जिज्ञासमानानाम् प्रमाणं परमं श्रुतिः। अर्थात् धर्म के जिज्ञासुओं के लिए इस विश्व में सबसे बड़ा प्रमाण परम श्रुति (वेद) है। मनु महाराज यह भी कहते हैं कि **"यस्तर्केणा-नुसंधत्ते स धर्मः वेद नेतर"** अर्थात् जो तर्क से अनुसंधान करता है वह ही धर्म के गूढ़ तत्व को जान सकता है।

अथर्ववेद इसलिए कह रहा है कि हे परम देव मुझे पहले दीर्घ आयु दे। फिर स्वस्थ-सुन्दर मन, बुद्धि और इन्द्रियाँ दे। गृहस्थ आश्रम में मुझे उत्तम संतान मिले गौ, घोड़े आदि पशुओं का सान्निध्य हो। इस व्यक्तिगत व पारिवारिक सुख शान्ति के बाद मुझे चारों दिशाओं में यश कीर्ति मिले। कीर्ति के बाद मुझे धन की भी कोई कमी न रहे। कीर्ति और वैभव के पश्चात् मुझे ज्ञान मिले ताकि मैं बाद में ब्रह्मलोक का अधिकारी बन सकूं। वेद का उपदेश स्पष्ट है कि जो लोग धन के लिए अपने स्वास्थ्य, परिवार तथा कीर्ति को दांव पर लगाते हैं या उनकी उपेक्षा करते हैं, उन्हें बाद में पश्चाताप करना पड़ता है। धन (की अधिकता) ने कभी किसी को तृप्त नहीं किया। आत्म ज्ञान के लिए व्यक्ति को पहली सीढ़ियों से गुजरना है। यही बात तो यजुर्वेद के महामृत्युञ्जय मंत्र में और भी स्पष्ट रुप से कही गयी है -

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

अर्थात् हे सारे संसार को सुगन्ध व पुष्टि देने वाले प्रभु ! मुझे खरबुजे की तरह बन्धन से, मृत्यु से छुड़ा कर अमृत को पान कराओ । खरबुजा तभी बन्धन से छूटता है जब तक वह पक जाता है और पकने के लिए उसे बेल से जुड़ना ही पड़ता है, वृद्धि व मिठास के लिए उससे रस लेना पड़ता है । ठीक इसी तरह से व्यक्ति को अपने विकास, मिठास तथा परिपक्वता के लिए सांसारिक बन्धनों से बचना आवश्यक है। नहीं तो विकास, मिठास व पूर्णता में कहीं कमी रह ही जाएगी । बिना इनके आत्म ज्ञान कैसे होगा और कैसे होगी मुक्ति की प्राप्ति ?

योग शास्त्र में भगवान् पतञ्जलि ने योग के लिए आत्मज्ञान के लिए अध्यात्म की उच्चता के लिए आठ अंगों का पालन आवश्यक बताया । बिना पांच यमों (सामाजिक अनुशासन) व पांच नियमों (व्यक्तिगत अनुशासन) के कोई भी व्यक्ति अध्यात्म की सीढ़ी पर नहीं चढ़ सकता । पूरा योग ही एक अनुशासन का नाम है। शासन दूसरों पर होता है पर अनुशासन का अर्थ अपने ऊपर-अपने व इन्द्रियों के ऊपर-शासन का नाम है । आज तो योग शिक्षक बनकर अध्यात्म मार्ग का वस्तुतः उपहास कर रहे हैं । बिना यम नियमों का खान-पान के नियन्त्रण के बिना भी आज-कल के लोग मेडिटेशन (ध्यान कहना तो गलत ही होगा) कर के चन्द दिनों में विभिन्न प्रकार का प्रकाश रखने का आत्म ढोंग करते हैं । ऋग्वेद भी प्रेरणा दे रहा है 'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्' अर्थात् मनुष्य बनो और देवताओं को पैदा करो । इंसानियत व देवत्व की प्राप्ति के लिए हमें प्रकाश (ज्ञान) के पीछे चलना होगा । रोशनी के रास्ते की रक्षा कर उसे आगे बढ़ाना होगा और यह सब दुनियां के ताने बाने बुनते हुए, त्यागपूर्वक भोग करते हुए ज्ञान की मशाल हाथ में लेकर अज्ञान, अन्याय व अभाव के अंधकार को चीरना होगा । तभी हम आत्मज्ञान के अधिकारी बनेंगे और तभी अध्यात्म के दिव्य रस का पान हम कर सकेंगे ।

मित्रों ! यह देश आत्मज्ञान व अध्यात्मिक के कारण दुनियां का कभी सिरमौर था । यह तभी तक रहा जब तक वेद का दीपक घर-घर में जलता रहा । अपनी शांति के लिए, अपने बच्चों की समृद्धि के लिए, अपने देश की प्रगति के लिए आओ, आज पुनः हम वेद की ज्योति घर-घर में पहुंचायें। जिस दिन वेद का अध्यात्म संसार में फैलेगा, तब लोगों के हृदयों से बैर, वैमनस्य दूर होकर तथा आतंकवाद और अपराध खत्म होकर विश्व एक कुटुम्ब बन पाएगा। एक नीड बन जाएगा। **पता : पूर्व कमिश्नर, मुम्बई, वर्तमान सांसद बागपत**

गुदगुदी

* एक दुकानदार ने कोई डायरेक्टर संबंधी सूचना प्राप्त करने के लिए फोन १७८ नं. मिलाया । उधर से किसी युवती ने उत्तर दिया, मुझे खेद है, कृपया आप इस सूचना के लिए १७९ नं. मिलाए । दुकानदार ने नया नंबर मिलाया, बात होने पर उसे लगा कि यह स्वर उसी युवती का है । उसने कहा, अभी-अभी क्या आप से ही बात नहीं हुई थी ।

  · जी हाँ, मैं ही थी । उत्तर मिला । क्या करूँ, आज दोनों का काम मैं ही देख रही हूँ ।
* बस में बहुत भीड़ थी । एक यात्री भीतर आया और बोला, उफ् ! लगता है बस में जानवर भरे पड़े हैं । पास ही बैठा एक युवक बोला, जी हाँ, बस एक गधे की कमी थी, जो आपने पूरी कर दी ।
* अध्यापिका ने कक्षा में प्रश्न पूछा - चैन्नई शहर का नाम चैन्नई क्यों पड़ा ? काफी देर कक्षा में सन्नाटा रहा । फिर एक बच्चे ने हाथ उठाया । अध्यापिका ने खुश होकर कहा, हाँ, शाबाश बताओ । छात्र ने कहा, चैन्न शहर में लोग अधिकतर लुंगी पहनते हैं और उसमें चैन नहीं होती, इसलिए शहर का नाम चैन्नई पड़ा ।
* अपने छोटे भाई के जन्म की बात सुनकर राज उसे देखने अस्पताल गया । वहां उसने छोटे भाई को गोद में ले लिया । नवजात शिशु ने राज की गोद में पेशाब कर दिया । इस पर राज पास से गुजरती हुई नर्स से बोला, यह बच्चा लीक करता है, बदल कर दूसरा दो ।

- अनिल आर्य, दुर्ग

आर्ष योग की सातवीं सीढ़ी-"ध्यान"

– आचार्य आर्यनरेश,
वैदिक गवेषक

अन्य सभी विद्याओं के समान योग विद्या के मूल में भगवान् की पावन वाणी वेद ही है। जैसे अथर्ववेद में आया है - **इमं यवमष्टायोगै:।** यहां योग शब्द का अर्थ समाधि अर्थात् अपने आपको, अपने शरीर को तथा समस्त संसार को 'शून्यवृ' भूले हुए के समान स्थिति होकर केवल परमात्मा के ही आनन्द की अनुभूति होना। जिस तरह से लोहा आग में रखने के कुछ काल पश्चात् अपना स्वरूप खोकर आग जैसा ही हो जाता है, जब तक कि वह आग में रहता है। ठीके ऐसे ही ध्यान करने वाला योगी जब तक समाधि की स्थिति या काल रहता है। ईश्वर के आनन्द में गुमसुम होकर, बाहर सब कुछ भूल जाता है। इतना ही नहीं अपने आत्मा को भी भूला हुआ सा केवल भगवान के ही आनन्द में मग्न रहता है। इसी का नाम वास्तविक योग है, शेष विभिन्न आसन आदि के यौगिक व्यायाम कहना चाहिए।

यम से लेकर प्राणायाम तक बहिरङ्ग योग व प्रत्याहार से लेकर समाधि तक को अन्तरङ्ग योग कह सकते हैं। बहिरङ्ग योग इसलिये क्योंकि उनका सम्बन्ध अधिकतर शरीर प्राण व आचार सम्बन्धी व्यवहार के साथ है। प्रत्याहार से अतरङ्ग योग प्रारम्भ होता है क्योंकि इससे अन्तःकरण के आचार मन को स्थिर व वश में किया जाता है, जिस पर धारणा, ध्यान व समाधि की स्थिति बनती है। सात्विक भोजन, सात्विक विचार तथा न्यायपूर्ण सात्विक व्यवहार मन को पवित्र करने के प्रमुख साधन है। वेदज्ञ साधर्मों का सत्कार, सुधर्मी धनाढ्यों से प्यार, दुःखीजनों के प्रति करुणा का व्यवहार और अपुण्यजनों के कल्याण हेतु ईशाधार दूर से नमस्कार अर्थात् उपेक्षा। यहां उपेक्षा का अर्थ उन पापियों को यूं ही आजकल की तरह बिना दण्ड दिए छोड़ना नहीं है अपितु उपेक्षारूपी दण्ड देना है। जी हाँ। उपेक्षा भी एक बहुत बड़ा दण्ड है। यही उपेक्षा कभी-कभी दुष्टों को या तो देवता बना देती है अथवा सद्गति (मृत्यु) करवा देही है। यदि किसी पापी के साथ घर-बाहर वाले, अपने व पराये कोई भी बात न करेंगे एवं उसे देख कर सभी अपने सम्बन्ध तोड़कर मुंह फेर लेंगे, तो इससे या तो वह सुधर जाएगा अथवा ऐसे एकाकी जीवन से जिसमें अपनी व बच्चे भी मुंह फेर रहे हैं देखकर आत्मा हत्या कर लेगा।

मन को प्राणायाम से विचार शून्य करने का नाम प्रत्याहार है। एक बात सदा ध्यांन में रखें, कपालभाति, मस्त्रिका, लोम-विलोम अथवा सूर्य चन्द्र आदि सभी प्राण क्रियाएं है, एवं प्राणायाम केवल योगदर्शनानुसार चार है। बाह्य, अभ्यन्तर, स्तम्भवृत्ति, बाह्याभ्यन्तर विषया होती है। प्राणायामों और प्राण क्रियाओं में मौलिक-अन्तर यह है कि क्रियाओं में प्राण को रोकना नहीं पड़ता, परन्तु प्राणायामों में बाह्य, भीतर अथवा यथा स्थिति प्राण रोकना पड़ता है। प्राणायाम से प्रत्याहार की सिद्धि के पश्चात शरीर में किसी एक स्थान यथा आज्ञाचक्र (दोनों आँखों के मध्य), नासिकाअग्र अथवा हृदयदेश (दोनों स्तनों के मध्य जो गति है) आदि स्थानों पर उसे विचार शून्य मन को धरने का नाम धारणा है। जैसे कोई पट्टियों वाली रिक्शे आपकी ओर सरकती आ रही है, तो अपने उसका हैंडल पकड़ कर स्थिर किया, अपने अधीन किया। यह हुआ प्रत्याहार ; और फिर इसे अपनी यात्रा पूर्ण करने हेतु कोई ठीक दिशा में मोड़कर खड़ाकर दिया, यह हुआ धारणा। फिर उसे ठीक दिशा व स्थान पर धरे हुए पर बैठकर आपने अपनी मंजिल की ओर चलना प्रारम्भ किया। यह हुआ ध्यान। चित्र या मूर्ति से ध्यान एकाग्र न होकर उसके अङ्गों में घूमता रहता है, परन्तु ईश गुणों में ध्यान होने से प्रभु का गुण गाते-गाते उसी में एकाग्र होकर रखा जाता है। ओ३म् ध्यान करते समय ईश्वर को छोड़कर किसी गुरु किसी पदार्थ यथा मालादि व किसी अष्ट वस्तु की बात

को चर्चा, चिन्ता तथा चित्र न रहना चाहिए केवल अर्थपूर्वक ओ३म् का जाप करना या उपासना विषयक गायत्री आदि मन्त्र का जाप करना चाहिए।

ध्यान योग में ध्यान किसका व कैसे ?

(सभी ऋषि, देवता, यति तथा गुरु किस का ध्यान किया करते थे?)

ऋषि पतञ्जलि के अनुसार योग का अर्थ है सर्वव्यापक, निराकार, वेदज्ञान दाता, कर्मफल प्रदाता, सर्वक्लेश आदि से पृथक सृष्टिकर्ता ओम प्रभु का ध्यान। योग के नाम से ध्यान करने वालों को सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि वे यह अच्छी प्रकार से जान लें कि जिसके लिए ध्यान कर रहे हैं अथवा करना चाहते हैं वह 'आनन्दप्रदाता' ईश्वर क्या है, कहां है एवं कैसा है ? ऋषि दयानन्द ध्यान करते थे, गुरुनानकजी ध्यान करते थे, श्रीकृष्ण, श्रीराम, श्री शिव एवं श्री ब्रह्मा सभी ध्यान भक्ति करते थे। उनके चित्र भी ध्यान करते हुए मिलते हैं यथा शिव, ब्रह्मा, कृष्ण व देव दयानन्द। जो ध्यान भक्ति कर रहा है या करता था उसे आप भक्त कहेंगे या कि भगवान ? उत्तर मिला कि क्योंकि वे ध्यान भक्ति करते थे अतः वे भक्त हुए और जिसका वे ध्यान करते थे वह भगवान्। जब आप बुद्धि पूर्वक विचार करेंगे तो आपको यह पता चलेगा कि वे सब देव ओ३म् का ही ध्यान करते थे। उसके ऐतिहासिक ग्रन्थों से भी यही सिद्ध होता है। चाहे रामायण, गीता व गुरुग्रन्थ साहब को उठाकर देख लें। इसी ओ३म् नाम का अर्थपूर्वक जाप करते हुए ध्यान करने का उपदेश ऋषि पतञ्जलि योग दर्शन में करते हैं यथा **'तस्य वाचकः प्रणवः तज्जपस्त दर्थभावनम्'** अर्थात् ईश का मुख्य नाम ओ३म् है एवं ध्यान-योग हेतु उसी के गुणों का अर्थ-पूर्वक जाप करना चाहिए।

ध्यान का अर्थ ऋषि पतञ्जलि के अनुसार अर्थ है - **"तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्"** अर्थात् जिस स्थान पर धारण (मन को केन्द्र किया है) की स्थिति बनाई है, उसी स्थान पर परमेश्वर को व्याप्त जानकर, उसके मुख्य नाम ओ३म् का अर्थपूर्वक अत्यन्त श्रद्धा व प्रेमभक्ति से विचार करना। इस भावना के साथ भगवान् हमारी बात (जाप) सुन रहा है जो हम कह रहे हैं। ऐसा भावात्मक सम्बन्ध बनाते हुए जैसे समुद्र में नदी प्रवेश करती है, उसी तरह प्राणायाम द्वारा अपने आपको बाहर के सब विचारों व विषयों से पृथक करके केवल परमात्मा की ओर बढ़ते जाना। जैसे जिस व्यक्ति को जिस वस्तु व व्यक्ति की इच्छा, आवश्यकता तथा तड़प होती है तो वह केवल उसी के ही ध्यान में मग्न रहता (या चिन्तित रहता) है। उसे संसार की अन्य सब प्रज्वलित लग्न, ध्याता को ईश्वर के प्रति होनी चाहिए। यदि ईश्वर को मिलने की तड़प ही नहीं तो फिर ऐसा ध्यान मात्र समय का विनाश व ध्यान के नाम पर अपने को एक धोखा है। भगवान् भी तो जानता है कि यह एक रोज की चर्चा से बैठा तो है पर इसका उद्देश्य उससे मिलने का नहीं मात्र उस समय पर उपस्थित (हाजरी) लगाने एवं खानापूर्ति करने का ही है। सो ऐसी ढुलमुल मानसिक स्थिति में क्या तो ध्यान लगेगा वे क्या उस भगवान् से मिलेगा ? साधक वृन्द ! ध्यान की विधि जो बताई जा रही है इसे जानना मात्र ध्यान नहीं, इसे जीवन में उतारना ध्यान है। प्रतिदिन के कर्मों को करते हुए यह ध्यान रखना कि प्रभु सर्वव्यापक रूप से हमारे साथ है, ऐसा ध्यान रखना भी योग ध्यान नहीं, क्योंकि यह तो मात्र आस्तिक रहते बनते हुए अपने बाह्य व आन्तरिक क्रियाओं का सुधार है जिसे 'ध्यान' नहीं, अपितु यम-नियम कहते हैं। ध्यान करना तो वस्तुतः उस क्रिया का नाम है जो प्रातः, सायं शौच स्नानादि से शुद्ध व विचारों से पवित्र होकर एकान्त, शान्त, पवित्र स्थान व सुखकारी कोमल आसन पर बैठकर ओ३म् प्रभु की करोड़ों सुविधाओं के बदले उसका धन्यवाद करते हुए केवल उसी को पाने की तीव्र इच्छा से **ओ३म् तत्सत्** अथवा गायत्री मन्त्र को संसार के सब लोगों हेतु गायत्री अर्थ-विज्ञान महाध्यान विज्ञान हो सकता है, यदि विधि आती है तो ओ३म् गायत्री मन्त्र संसार के अधिकतर लोगों को आता है अतः इनका अर्थ स्मरण करके गायत्री विज्ञान को सिद्ध करने का प्रयास करें। इसके लिए आवश्यक है कि गायत्री के प्रत्येक शब्द का अर्थ याद होना चाहिए। समय मिला तो इस पर भी लिखेंगे।

पता - उद्गीथ साधना स्थली, हिमाचल प्रदेश

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं पुण्यं लोकं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥

'महर्षि दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश और आर्यसमाज मुझे क्यों प्रिय हैं'

- मनमोहन कुमार आर्य

वैयक्तिक

सृष्टि के आरम्भ से लेकर अद्यावधि संसार में अनेक महापुरुष हुए हैं। उनमें से अनेकों ने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं या फिर उनके शिष्यों ने उनकी शिक्षाओं का संग्रह कर उसे ग्रन्थ के रुप में संकलित किया है। हम उत्तम महान पुरुष को प्राप्त करने के लिए निकले तो हमें आदर्श महापुरुष के रुप में महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रतीत हुए। हमने उन्हें अपने जीवन में सर्वोत्तम आदर्श महापुरुष के रुप में स्वीकार किया है। ऐसा नहीं कि उनसे पूर्व उनके समान व उनसे उत्कृष्ट पुरुष या महापुरुष, महर्षि, ऋषि, योगी आदि उत्पन्न ही नहीं हुए। हमारा कहना मात्र यह है कि हमारे सम्मुख जिन महापुरुषों के विस्तृत जीवन चरित्र उपलब्ध है, उनमें से हमने महर्षि दयानन्द को अपने जीवन का सत्य, यथार्थ व आदर्श पथ प्रदर्शक पाया है। न केवल हमारे अपितु वह विश्व के सभी मनुष्यों के सच्चे हितैषी, विश्वगुरु व पथप्रदर्शक रहे हैं व अपने ग्रन्थों व कार्यों के कारण अब भी हैं।

विश्व के लोगों अपने अज्ञानता व कुछ निजी कारणों से उनका उचित मूल्यांकन नहीं किया। महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त हम अन्य महापुरुषों यथा श्रीरामचन्द्र जी, योगेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र जी, आचार्य चाणक्य, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, बन्दा बैरागी और सभी आर्य विद्वानों व प्रचारकों को भी अपना आदर्श मानते हैं।

संसार में सृष्टि के आरम्भ से अद्यावधि अनेक ग्रन्थों की रचना हुई है। गणनातीत ग्रन्थों में एक ग्रन्थ वेद भी है जिसके बारे में हमें महर्षि दयानन्द जी से पता चला कि वह मनुष्यों व ऋषियों की रचना नहीं अपितु ईश्वरीय ज्ञान है जो सृष्टि के आरम्भ में चार सर्वाधिक पवित्र ऋषि आत्माओं अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को संसार के तत्कालीन व भावी मनुष्यों के कल्याण व उद्धार के लिए ईश्वर ने अपने अन्तर्यामी स्वरुप से दिया था। उस ज्ञान को ही स्मरण कर व अन्यों में प्रचार कर इन चार ऋषियों व इनसे पढ़कर ब्रह्माजी ने प्रथम वेदों का प्रचार व प्रसार किया था और तब जो परम्पराआरम्भ हुई थी, उसका ही निर्वहन महर्षि दयानन्द ने ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में किया। महर्षि दयानन्द के आर्विभाव से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व महाभारत का प्रसिद्ध महायुद्ध हो चुका था। इसके परिणामस्वरुप विश्व की अपने समय की एकमात्र सनातन वैदिक धर्म व संस्कृति की कालान्तर में अप्रत्याशित अवनति हुई थी। वेद विलुप्ति के कगार पर थे। वेदों के सत्य अर्थ तो प्रायः विलुप्त ही हो चुके थे तथा उनके स्थान पर कपोल कल्पित भ्रान्त अर्थ प्रचलित थे। वैदिक धर्म व संस्कृति में भी अनेक विकार आकर यह अन्धविश्वासों, कुरीतियो, पाखण्डों व सामाजिक असमानताओं सहित शिक्षा व ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में बहुत अधिक अवनत अवस्था में आ गई थी। यही कारण था देश देश से बाहर अनेक अवैदिक मतों का प्रादुर्भाव हो चुका था। सभी मत सत्य व असत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों से युक्त थे।

इन मतों के कारण लोग परस्पर मित्र भाव न रखकर एक दूसरे के प्रति शत्रु भाव ही प्रायः रखते थे। दिन प्रतिदिन इसमें वृद्धि हो रही थी। ऐसा कोई महापुरुष उत्पन्न नहीं हुआ था जो इनमें एकता के सूत्र की तलाश करता और उसका प्रस्ताव कर अपने मिथ्या विश्वासों और मान्यताओं को छोड़कर सत्य का ग्रहण करने व असत्य का त्याग करने का आह्वान करता। यह काम महर्षि दयानन्द (१८२५-१८८३) ने अपने समय में अपनी पूरी शक्ति व प्राणों की बाजी लगाकर किया जिसका परिणाम आज का पूर्व की तुलना में अधिक

उन्नत विश्व कहा जा सकता है जिसमें अनेक अन्धविश्वास कम व दूर हुए हैं, सामाजिक कुरीतियां व विषमताओं कम व दूर हुई है और ज्ञान-विज्ञान, देश-विदेश में नित्य नई ऊंचाईयों को छू रहा है।

महर्षि दयानन्द ने अपने अपूर्व संकल्प, इच्छा शक्ति, वेद ज्ञान, साहस, वीरता, देश प्रेम, प्राणीमात्र के हित को सम्मुख रखकर विश्व कल्याण के लिए वेदों की ओर लौटो का सन्देश दिया। उन्होंने बताया कि वेद ईश्वर प्रदत्त सत्य व प्रमाणिक ज्ञान है। उनकी मान्यता था कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है तथा वेदों का पढ़ना व पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना सब आर्यों अर्थात् श्रेष्ठ, बुद्धिमान, ईश्वर को मानने वाले सच्चे व निष्पक्ष लोगों का परम कर्त्तव्य व धर्म है। वेदों की सत्यता और प्रमाणिकता के साथ ही वेदों की प्रासंगिकता और सर्वांगपूर्ण धर्म की पुस्तक होने के प्रबल समर्थन उन्होंने युक्ति व तर्कों सहित अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में किया है। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय आदि उनके अनेक ग्रन्थ हैं जो सत्यार्थ प्रकाश की मान्यताओं व सिद्धान्तों के पूरक हैं। उनके साहित्य से सिद्ध होता है कि वेद पूर्णरुपेण सर्वांगपूर्ण धर्म ग्रन्थ है। धर्म की जिज्ञासा के लिए अन्य किसी ग्रन्थ की मनुष्यों को अपेक्षा नहीं है क्योंकि वेद ईश्वरीय सत्य वाक् होने से स्वतः प्रमाण और संसार के अन्य सभी ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं। अर्थात् सत्य व प्रमाणिकता में वेदों के समान संसार का अन्य कोई ग्रन्थ नहीं है। हाँ, भाषा आदि के ज्ञान की दृष्टि से वेदों के संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी व अन्य-अन्य भाषाओं में भाष्य व टीकाओं की सहायता ली जा सकती है। सत्यार्थ प्रकाश को भी हम संसार के सभी मनुष्यों का एक आदर्श धर्म ग्रन्थ कह सकते हैं, जिसमें वेदों की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए मनुष्यों के मुख्य-मुख्य कर्त्तव्यों पर प्रकाश डालने के साथ अकर्त्तव्य, अन्धविश्वासों व मिथ्या मान्यताओं का परिचय देकर उनका त्याग करने की प्रेरणा भी दी गई है। सत्यार्थ प्रकाश में ऐसा क्या है जो हमें सर्वाधिक प्रिय है ? इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत करते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश का आरम्भ महर्षि दयानन्द ने विस्तृत भूमिका लिख कर दिया है। इससे महर्षि दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश की रचना करने का उद्देश्य तथा पुस्तक में सम्मिलित किये गये विषयों का ज्ञान होता है। वह लिखते हैं कि उनका इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य और जो प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए विद्वान, आप्तो (धर्म विशेषज्ञों) का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरुप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयम् अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहे। महर्षि दयानन्द ने भूमिका में इन वाक्यों में जो कुछ कहा है, उसका उन्होंने पूरो सत्यार्थ प्रकाश में पूरी निष्ठा से पालन किया है। हम समझते हैं कि इस प्रयोजन व उद्देश्य से शायद ही कोई धर्म ग्रन्थ लिखा गया हो और यदि लिखा भी गया है तो सम्प्रति उनमें अनेक अशुद्धियां व असत्य मान्यतायें, अन्य मतों के प्रति विरोध व शत्रुता का भाव, छल, कपट, लोभ व बल पूर्वक उनका धर्मान्तरण करने का विचार व अनुमति जैसे अमानवीय विचार विद्यमान है, जिससे संसार में अशान्ति उत्पन्न हुई है।

सत्यार्थ प्रकाश के पहले समुल्लास व अध्याय में हम ईश्वर के मुख्य निज नाम सहित उसके स्वरुप व १०० से कुछ अधिक नामों व उन नामों के तात्पर्य के बारे में सविस्तार जानकारी प्राप्त करते हैं। इससे वेदों में अनेक ईश्वर व देवता होने की बात निरर्थक व असत्य सिद्ध होती है तथा यह विदित होता है कि एक ही ईश्वर के असंख्य गुण-कर्म-स्वभाव व सम्बन्धों के कारण उसके अनेक नाम हैं। इस अध्याय को समझ लेने पर जहां ईश्वर का सत्य स्वरुप जानकर आत्मा की तृप्ति होती है वहीं ईश्वर के स्वरुप, नाम व कार्यों के विषय में भिन्न-भिन्न ग्रन्थों में जो मिथ्या व अन्धविश्वासयुक्त कथन है, उसका भी निराकरण हो जाता है। दूसरे अध्याय में माता-

पिता व आचार्यों द्वारा कैसी शिक्षा दी जाये इसका ज्ञान कराया गया है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण व मनुष्य व समाज के धारण व व्यवहार करने योग्य है। तीसरा समुल्लास पढ़कर ब्रह्मचर्य का महत्व व उससे लाभ, पठन, पाठन वा अध्ययन-अध्यापन सहित सत्य व असत्य ग्रन्थों का भी परिचय मिलता है और पढ़ने वा पढ़ाने की रीति का भी ज्ञान होता है। सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्लास में युवावस्था में विवाह और गृहस्थ आश्रम के सद् व्यवहारों की शिक्षा दी गई है। पांचवा अध्याय गृहस्थाश्रम का निर्वाह कर इसके कर्त्तव्यों व दायित्वों से मुक्त होकर वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में प्रवेश व उसके महत्व व विधान को विस्तार से समझाया गया है। इस विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ का छठा अध्याय प्रजा व राजधर्म विषय पर है जिसमें वेद व मुख्यतः मनुस्मृति के आधार पर शासन व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है जिसे पढ़कर अनेक बातों में यह वर्तमान की व्यवस्था से भी श्रेष्ठ प्रतीत होती है। सातवां समुल्लास ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद और ईश्वर के स्वरुप के बारे में वेद, युक्ति तर्क तथ ज्ञान-विज्ञान से पुष्ट ईश्वर के स्वरुप पर प्रकाश डाल कर श्रोता की इस विषय में पूर्ण सन्तुष्टि कराता है, जिससे संसार के अन्य एतसम्बन्धी ग्रनथ निरर्थक से प्रतीत होते हैं। आठवां समुल्लास वैदिक सृष्टि विज्ञान से संबंधित है जिसमें जगत की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय पर ज्ञान व विज्ञान से परिपूर्ण प्रकाश डाला गया है। यह ज्ञान संसार के अन्य सभी धर्म ग्रन्थों में प्रायः नदारद है, जिसमें उनकी न्यूनता व अपूर्णता प्रकट होती है।

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के नवम समुल्लास में विद्या, अविद्या, बन्धन तथा मोक्ष, जन्म, मृत्यु, लोक व परलोक की ज्ञान से पूर्ण व्यवस्था प्रश्नोत्तर शैली में कर वैदिक ज्ञान का संसार से लोहा मनवाया गया है। दसवें समुल्लास में आचार, अनाचार, भक्ष्य और अभक्ष्य आदि अनेक विषयों पर प्रकाश डाला गया है। ग्यारहवां समुल्लास भारतवर्षीय नाना मत-मतान्तरों की अज्ञानपूर्ण मान्यताओं का परिचय कराता है और साथ ही उनका युक्ति व प्रमाणों से खण्डन किया गया है। जिसका उद्देश्य सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग करना मात्र है। बारहवें, तेरहवें व चौदहवें समुल्लास में क्रमशः चारवाक्-बौद्ध-जैन, ईसाई व मुस्लिम मत का विषय प्रस्तुत कर सत्य के ग्रहणार्थ उनकी कुछ मान्यताओं का परिचय दिया गया है। इस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करने पर मनुष्य को अपने कर्त्तव्य व धर्म को पूर्ण बोध होने के साथ अन्य मतों का परिचय भी मिलता है। सत्यार्थ प्रकाश के अनुरुप अन्य कोई ग्रन्थ संसार में नहीं है। इससे सत्य धर्म का निर्णय करने व उसका पालन करने का ज्ञात होता है, जिससे मानव जीवन सफल होता है। सत्यार्थ प्रकाश वेदों पर आधारित ग्रन्थ हैं, इसमें दी गई मान्यतायें सार्वभौमिक है और विश्वस्तर पर इनका पालन होने से अशान्ति दूर होकर विश्व में शान्ति की स्थापना की पूर्ण सम्भावना परिलक्षित होती है। सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर मनुष्य सत्य विधि से ईश्वरोपासना करने वाला भक्त, वायु-जल-पर्यावरण का शुद्धिकर्ता, माता-पिता-आचार्य-विद्वानों-सच्चे-सन्यासियों की सेवा करने वाला, देशभक्त, समाजसेवी, ज्ञान-विज्ञान का पोषक व धारणकर्ता, स्त्रियों को आदर व सम्मान देने वाला तथा वैदिक गुणों से धारित स्त्रियों को माता के समान मानकर उनका सम्मान करने वाला आदि अनेकानेक गुणों वाला मनुष्य निर्मित होता है। यह कार्य सत्यार्थ प्रकाश व वेद करते हैं जो अन्य किसी प्रकार से नहीं होता। सत्यार्थ प्रकाश का उद्देश्य किसी मत-मतान्तर का विरोध न कर केवल सत्य को प्रस्तुत करना व उसका पालन करने के लिये लोगों को प्रेरित करना है, यही सब ग्रन्थ की संसार के अन्य सभी ग्रन्थों से विष्टिता है। हम सत्यार्थ प्रकाश को देवता कोटि के मनुष्यों द्वारा रचित ग्रन्थों में सर्वोत्तम ग्रन्थ पाते हैं, इसलिये हमें यह ग्रन्थ सर्वाधिक प्रिय है। इसके लेखक महर्षि दयानन्द में आदर्श महापुरुष के सभी दिव्य गुण व क्रियायें विद्यमान होने व उन्होने समाज, देश व विश्व की उन्नति के लिए जो अवदान वा योगदान दिया है, इस कारण उन्हें सर्वोत्तम आदर्श महापुरुष मानते हैं।

महर्षि दयानन्द ने वैदिक विचारधारा, मान्यताओं व सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार के लिए १० अप्रैल १८७५ को मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज ने वेदों के प्रचार प्रसार, कुरीति उन्मूलन, सामाजिक विषमता दूर कर समसरता स्थापित करने सहित देश को स्वतन्त्र कराने में प्रमुख भूमिका अदा की है। सम्प्रति समय के साथ कुछ शिथिलतायें भी संगठन में आई हैं जिसको दूर करना नितान्त

आवश्यक है जिससे कि प्रभावशाली तरीके से वेदों का प्रचार प्रसार हो और संगठन सुदृढ़ एवं आदर्श बने। महर्षि दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश और आर्यसमाज की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पूर्ण अहिंसात्मक संगठन है और प्रेम व सद्भावपूर्वक ज्ञान का प्रचार करता है। इसके मूल में अपनी संख्या बढ़ाने हेतु हिंसा, लोभ, लालच, छल व प्रपंच वर्जित है। यह प्राणी मात्र के प्रति दया रखता है। कोई भी सच्चा आर्यसमाजी मांसाहार व मदिरापान, अण्डे व अभक्ष्य पदार्थों का सेवन नहीं करता। आर्यसमाज व वैदिक धर्म के दरवाजे सभी मतों के अनुयायियों के लिये खुले हैं। कोई भी यहां आकर सदाचरण कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति के लिए साधना कर सफलता प्राप्त कर सकता है। आर्यशमाज ने दलितों सहित सभी वर्णों के बन्धुओं वैदिक विद्वान् बनाने के साथ पुरोहित बनाया है और सभी स्त्रियों को वेद विदुषी भी बनाया है। अनेक कार्यों में यह भी उसका अभूतपूर्व कार्य है। हम यहां यह भी कहना चाहते हैं कि विश्व भर में चर्चित योग वेदों की ही देन है। महर्षि पतञ्जलि के योग दर्शन का आधार वेद ही हैं। संसार का कोई मनुष्य यह नहीं कह सकता है कि वह योग को स्वीकार नहीं करता। सबके जीवन में कहीं अधिक व कहीं कुछ कम योग समाया हुआ है। किसी न किसी रुप में आसान, व्यायाम व प्राणायाम सभी करते हैं। योग के दो अंग यम व नियम तथा इनके उपांग अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान को भी प्रायः संसार के सभी लोग मानते व इन पर आचरण करते हैं। अतः हमारा मानना है कि संसार के सभी मतों के लोग आंशिक रुप से योग करते हैं। जो योग से परहेज करते हैं उन्हें योग को पूर्णतया अपने जीवन का अंग बनाना चाहिए। इसमें उन्हीं का लाभ व कल्याण है। हम यह भी कहना चाहते हैं कि हम आज जो कुछ हैं, उसमें महर्षि दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश और आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका है। लेख विस्तृत हो गया है अतः इन्हीं शब्दों के साथ हम लेखनी को विराम देते हैं और सभी पाठकों से आग्रह करते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश का जीवन में बार-बार पाठ करें। इससे आपको वह मिलेगा जो संसार के अन्य ग्रन्थों का अध्ययन करने से नहीं मिल सकता।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

हमारी नीति आचार-परम्परा

भारत अति प्राचीन समय से ही विश्व का नैतिक तथा आध्यात्मिक गुरु रहा है। हमारा नैतिक स्वरुप अध्यात्मिक स्वरुप के अधीन है। वर्तमान कर्म का बीज कालान्तर में अंकुरित होता है, यही धारणा हमें अनैतिक कर्मों से बचाए रखती है। हमारे यहां मनीषी महापुरुषों के अवतारों का उद्देश्य संसार को नैतिक शिक्षा से समन्वित करना तथा धर्म की व्यवस्था करना रहा है। जन-जन से परिवार, परिवार से समाज और समाज से देश अथवा राष्ट्र बनता है, जिसका शासक और नियामक एक राजा होता है। राजा भी नैतिक नियमों से बंधा होता है। नीति के प्रादुर्भाव का इतिहास सृष्टि से ही है। मनीषियों से हमें नैतिक आचरण की परम्परा प्राप्त हुई है। मनीषीजनों के अनुभवों का हम यही लाभ उठाए तो हमें हर समस्या का समाधान मिल जाता है। हमारे वेद नैतिक आचरण के मूल स्त्रोत हैं। हमें उनमें मनुष्य, देश, परिवार तथा समाज के सुखी होने की उच्च्व विचारधारा का प्रवाह मिलता है, जैसे **अनुवतः पितुः** - पुत्र-पुत्र पिता का अनुवर्ती। **माँ भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्**- भाई भाई से द्वेष न रखें। **अतिथि देवो भव**- अतिथि देवता के समान होता है। अतिथि की सेवा करो। **सं गच्छध्वं सं वदध्वम्** - मिलकर चलो, मिलकर बोलो। इसी प्रकार वेद की ऋचाओं में नीति के सुंदर उपदेश व्याप्त है। जैसे **असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय, सह नाववतु सहनो भुनक्तु, धर्मों रक्षति रक्षितः, माताः भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः** - भूमि मेरी माता है, मैं इसका पुत्र हूँ। जैसी हितैषी धरोहर थाती में प्राप्त है। संस्कृत साहित्य में नैतिक आचरण की मंदाकिनी बहती है। आवश्यकता है इसको पठन-मनन करने की और आचरण में लाने की ताकि हमारी नीति आचार परम्परा कायम रह सके।

- राजेश कुमार आर्य, टाटीबन्ध रायपुर

जीवन-दर्शन

यह नाराजगी किस पर और क्यों ?

★ श्री ओमप्रकाश बजाज

गुप्ता जी टेलीफोन विभाग वालों से रुष्ट है, शर्माजी को बिजली विभाग वालों से शिकायत है। श्रीवास्तव जी को नगर निगम वालों से गिला है। यादवजी डाकखाने वालों का रोना रोते हैं। नेमा जी जब भी मिलते हैं रेल्वे वालों को कोसते मिलते हैं। हम छः सात लोग इकट्ठे प्रातः भ्रमण हेतु जाते हैं। रास्ता भर चर्चा का केन्द्र बिन्दु एक ही होता है - विभिन्न विभागों के कर्मचारियों की अकर्मन्यता, काम न करने की प्रवृत्ति, बढ़ती हुई अनुशासनहीनता, फैलता हुआ भ्रष्टाचार, जनसाधारण की अवहेलना, हर स्तर पर हर जगह आम आदमी का तिरस्कार और शोषण।

बात कहीं से भी चले, घूम फिर कर आखिर आ इसी मुद्दे पर जाती है। आपसी चर्चा में ही नहीं समाचार पत्रों में भी इसी विषय पर तीखी टिप्पणियाँ होती है। अग्रलेख और संपादकीय लिखे जाते हैं। पाठकों के पत्र और प्रतिक्रियाएँ छपती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आज हर व्यक्ति कर्मचारी वर्ग के व्यवहार, कार्यशैली, मानसिकता से त्रस्त है।

आखिर यह गुस्सा, यह नाराजगी, यह आक्रोश किस पर और क्यों ? जिनकी सुस्ती, लापरवाही, कामचोरी, अनुशासनहीनता, दुर्व्यव्यहार, भ्रष्टाचार आदि कुप्रवृतियों पर हम आप निरन्तर क्षोभ एवं आक्रोश व्यक्त करते हैं वे क्या कहीं बाहर से आए हैं ? क्या वे हमसे आप से भिन्न है, अलग है ? नहीं, वे भी तो हम में से ही है। कैसी विडम्बना है कि स्वयं अपने ही रवैये पर हमें शिकायत भी है ! मजे की बात तो यह है कि बिजली विभाग वाले को रेलवे वाले से शिकायत है तो रेलवे वाले को बिजली वाले से, इसी प्रकार हर एक को एक दूसरे से असंतोष है।

आखिर ऐसा है क्यों ? जरा दिल पर हाथ रख कर बताइए कि किसी भी विभाग में कार्यरत आप का भाई, बेटा, बेटी यदि काम पर देर से जाता है, जल्दी भाग जाता है, लगन और ईमानदारी से काम नहीं करता, लोगों से दुर्व्यवहार करता है, घूस लेता है, अनुशासनहीन है, भ्रष्ट है तो क्या आप ने कभी उसे रोका टोका या समझाया बुझाया है ? यदि आप की पत्नी बहन या बेटी स्कूल या कालेज में पढ़ाने के समय अथवा कार्यालय में काम के समय गप लड़ाती, चाय पीती या स्वैटर बुनती है तो क्या आपने कभी उसे मना किया है ? सम्भवतः नहीं, यदि आप स्वयं भी एक कर्मचारी है तो जरा अपने अंदर झांक कर भी देख लीजिए कि कहीं आप स्वयं भी यही कुछ तो नहीं करते !

हमारी सामान्य प्रवृति ही यह है कि हमें दूसरों की आंख का तिनका तो नजर आ जाता है किन्तु अपनी आंख का शहतीर भी दिखाई नहीं पड़ता। हम दूसरों को सुधारने की बात तो करते हैं मगर स्वयं अपने ऊपर भूल कर भी निगाह नहीं डालते। पुरानी कहावत है नां कि "औरों को नसीहत खुद मियां फजीहत" बुजुर्ग कह गए हैं कि "खैरात हमेशा घर से शुरु होती है"। जिन बातों की शिकायत हमें दूसरों से है, आवश्यक है कि सब से पहले हम स्वयं अपने आपको, अपने भाई, बेटे, बहन, पत्नी, बेटी को उनसे दूर करें। तभी बात बन सकती है। स्वयं दोषी होते हुए उन्हीं कमियों त्रुटियों के लिए दूसरों की शिकायत करने से कोई लाभ नहीं। यह भी कभी मत सोचिए कि एक व्यक्ति या चंद व्यक्तियों के आचरण में बदलाव या सुधार से क्या होगा। बूंद-बूंद से घर भरता है। बदलाव का आरम्भ सदैव इक्का-दुक्का से होता है। किसी भी अच्छे काम की शुरूआत ही कठिन होती है। बाद में तो लोग जुड़ते जाते हैं और कारवां बनता जाता है।

पता - बी-२, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर (म.प्र.)

जो वेद से युक्त वाणियों से सम्पूर्ण व्यवहारों को सिद्ध करके और दुष्ट क्रियाओं और दुष्टों का त्याग करते हैं, वे ही उत्तम सुख को प्राप्त होते हैं। *- स्वामी दयानन्द सरस्वती*

सामाजिक

"घरेलू गुस्से का एक दिन"

- देवेन्द्र कुमार मिश्र

उसे नहीं पता था कि उसे कहां जाना है। हाँ उसे ये जरुर पता था कि वह आया कहां से है। लेकिन जहां से वह आया था वह वापिस नहीं जाना चाहता था। आखिर आत्म सम्मान नाम की भी कोई चीज होती है। कब तक सुनता रहे बात-बात पर कि निकल जाओ मेरे घर से।

मेरे घर से क्या मतलब क्या उसका घर नहीं था जिस घर में पैदा हुआ, वह बड़ा हुआ, वह उसका घर नहीं था। नहीं था तो नहीं रहना ऐसे घर में जो उसका है ही नहीं। था ही नहीं। समझ नहीं आता इतनी तकलीफ होती है पालने में तो पैदा ही क्यों कर लेते हैं। पैदा किया थोड़ा सा पाला। थोड़े बड़े हुए नहीं कि कमाकर लाओ। घर चलाकर बताओ। साल दो साल तो लगते ही हैं नौकरी ढूंढने में।

क्या वो कोई बैठकर जीवन भर खाना चाहता है। आज नहीं तो कल, कुछ न कुछ तो करेगा ही। धंधा करने के लिए पैचा चाहिए। पैसा न देते बनता है न कहीं से दिलवाते हैं। नौकरी नहीं मिलती तो कोई बिजनेस कर लो छोटा-मोटा। इतनी भी अक्ल नहीं कि बिना पैसे के बिजनेस नहीं होता और ढूंढ तो रहा था न नौकरी। ऐसा लगता है कि जैसे घर से भगाने का तरीका ढूंढ रहे हो। थोड़ी सी बहस क्या हुई। सही बात को सही क्या कह दिया। हल्ला मचा दिया बाप से पलटकर जवाब दे रहा है। इतनी ही गर्मी है तो किल जाओ मेरे घर से। ऐसा घर मेरी जूती से। घर कहते हैं इसे। दिन-रात ताने। जब देखों डाट-फटकार। नहीं रहना उसे भी ऐसे घर में।

सिर पर छत जरुरी है तन पर कपड़े भी आवश्यक है। पेट में रोटी भी जरुरी है किन्तु आतमसमम्मान क्या कोई चीज नहीं है ? धिक्कार है उसके जीवन पर। अपने को भी पाल नहीं सकता। स्वयं के जीने के सामान भी नहीं जुटा सकता। अब चाहे कुछ भी हो जाये भले ही मरना पड़े लेकिन उस घर में नहीं जायेगा। सुबह निकला था बिना खाये-पीये ये कहकर कि अब लौटकर नहीं आयेगा। बाप ने भी कह दिया। अपने बाप की औलाद है तो आना भी मत। दोपहर हो चली थी। अन्न का एक दाना भी नहीं गया था पेट में। वह बस चलता जा रहा था पैदल। सतत् लगातार। कहां जा रहा है खुद उसे भी पता नहीं।

प्यास लगी तो सार्वजनिक प्याऊ देखकर पानी पिया। जेब में हाथ डाले। दस का एक नोट था। एक समोसा खाया होटल में। एक चाय पी। दस रुपये खत्म। अब उसके पास कुछ नहीं था। किसी ने उसे आवाज भी दी। किन्तु न वह रुका न उसे समझ आया कि कौन था। वह बस चलता जा रहा था मानो उसे दुनियां से किसी दूसरी दुनियां में चला जायेगा। वह थककर चूर हो गया। अचानक जैसे उसकी स्मृति वापिस आ गाई हो वह रुक गया। उसने स्वयं शहर से बाहर पाया एक पहाड़ पर। हाँ शहर के बाहर मंदिर वाली पहाड़ी पर। वह थककर बैठ गया। सोचने लगा क्या होगा उसका भविष्य, क्या करेगा ? क्या खायेगा कैसे जीयेगा। घर तो जाना ही नहीं है। माँ के ऊपर भी उसे क्रोध आया। लड़का घर से जा रहा है। ये तक नहीं पूछा कि कहां जा रहा है क्यों जा रहा है। नाश्ता तो कर ले। बैठ गये माला लेकर। जब तब रिश्तेदार घर आते तो बस मेरे नाम का रोना लेकर बैठ जाती। कुछ करता नहीं है, इसे समझाओ।

क्या मैं इतना नासमझ हूँ कि लोग मुझे समझाते रहें। बड़ा भाई आता है साल में एक बार तो बड़ी आव-भगत होती है क्यों न हो बड़ा अफसर जो ठहरा। होगा अफसर मुझपर रौब क्यों ? झाड़ता है। मैं नौकर हूं क्या उसका। बड़े भाई होने के नाते कभी दिया तो कुछ नहीं। उसे बहिन पर भी क्रोध आया। जब तक शादी नही हुई थी तो घर में सर्वे-सर्वा बनी रहती थी। गलत कहे सही कहें घर के लोग हमेशा उसका पक्ष लेकर मुजे ही डांटते रहे। बेटी के लिए शादी में लाख खर्च किये। मेरी बारी आई तो पैसा नहीं है और आज भी जब आती है। तीज त्योहार में। साड़ी, नगदी क्या-क्या नहीं ले जाती हम करते रहे हमाली। उस पर मेरे घर आना तो लाना वो लाना। रक्षा बन्धन में पांच सौ से कम मत देना। मेरी

इज्जत का सवाल है। मेरा ये काम कर देना। ठेका ले रखा है क्या मैंने। इतनी अक्ल भी नहीं है कि बेरोजगार भाई से रुपये मांगकर उसकी बेईज्जती कर रही है।

दुनियां पैसों की है, पैसा है तो सब रिश्ते हैं। नहीं तो आपका कोई नहीं। न घर में इज्जत न बाहर मान हाँ उपदेश देने को कह दो तो सब तैयार बैठे हैं। ऐसी दुनियां में जीने से क्या लाभ। जहां कोई आपको न समझे। अपने भी परायो जैसा व्यवहार करें। ईश्वर भी तो नहीं सुनता। नहीं दे सकते नौकरी मत दो। कम से कम अपनी जान ही ले लो। पीछा छूटे इस मतलबी संसार से। उसका कोई नहीं है। वह अकेला है अनाथ है। इस संसार में व्यर्थ, भटक रहा है। उसे ऐसा लगा मानो पूरा संसार उसका दुश्मन हो। नवग्रह उसी के पीछे हाथ धोकर पड़े हैं। हे ईश्वर अब और नहीं रह सकता, उठा ले। मार डाल। कितना अपना कितनी पीड़ा। कितनी भटकन। वह क्या करें कहां जाये ?

रात हो चुकी थी। ठंड भी बढ़ने लगी थी। भूख-प्यास से कमजोरी छाने लगी। चल तो क्या अब वह बैठ भी नहीं पा रहा था। कम से कम २४ किमी. चल चुका था। वह मंदिर वाली पहाड़ी को काटकर रोड बनाया हुआ था। उसी से चलकर क्रोध के आवेग में वह यहां तक आ गया। वह पहाड़ पर वही लेट गया। मन में ख्याल आया कि कूद जाये इसी पहाड़ी से। फिर उसे सोचना न मरे हाथ-पैर टूट गये तो और मुसीबत। इतना सोच ले व्यक्ति तो फिर कोई आत्महत्या कर ही नहीं सकता। पहले आत्म हत्या करने वालों पर हंसता था वह। परीक्षा में फेल हो गये। जहर खा लिया। प्रेमिका ने धोखा दिया मर गये बेवकूफ साले। आज उसके मन में भी ख्याल आया लेकिन उसकी तो कोई प्रेमिका भी नहीं। होती तो सब दुखड़ा उसे ही सुनाता। बेवकूफ है जो उसने प्रेम नहीं किया किसी से। एक जीवन है कम से कम एक गर्लफ्रेण्ड तो बनाता। अभी देखा ही क्या है उसने ?

तभी अचानक सुबह की बातें फिर उसके दिमाग में गूंजने लगी उसका क्रोध बढ़ने फिर उफान मारने लगे। एक तो सुबह से भूखा प्यासा उस पर इतना चलता फिर क्रोध ही क्रोध। उसका सिर दर्द से फटने लगा। उसे चक्कर आने लगे। लेटे-लेटे ही उसे मूर्छा सी आ गई। बस उसे एक आटो की घर्र-घर्र सुनाई दी और किसी परिचित की सी आवाज वो रहा वो रहा। उसे उसके नाम से आवाज दी। उसके मुंह से आवाज न निकली। अब उसे लगा कि उसे आटो में पकड़कर बिठाया गया।

उसका सिर किसी के सीने पर रखा हुआ था और उसके गले में हाथ डाला हुआ था किसी ने। किसने और किसको पड़ी है। बाप ही होगा। उसकी नाक में पिता के सीने के पसीने की बदबू को अच्छी तरह जानता था किन्तु वह परिचित बदबू अच्छी लगी उसे। आखिर उसके बाप का सीना था। फिर उसे पड़ोस वाले अंकल की आवाज सुनाई दी। ये तो अच्छा हुआ कि मेरे लड़के ने इसे देख लिया। शुक्ला जी एक बात कहूँ बच्चों को डांटा मत करो। अपना जमाना नहीं रहा है माँ-पिता तो लात, हाथ डंडो से पीटते थे। मजाल है कि हम उफ भी कर सके। आज के बच्चे सहनशील नहीं रहे। कुछ कर लिया तो नुकसान तो अपना ही है। पिता की दुखी से आवाज सुनाई दी। बताइये अपने बच्चों को डांटना गुनाह हो गया। वह फिर मूर्छा में चला गया। थोड़ा होश आया तो घर के बिस्तर पर पाया खुद को।

माँ की आवाज सुनाई दी। माता बड़ी सच्ची है। मंदिर में जाकर मन्नत मांगी थी। यदि लड़का सही सलामत वापिस आ गया तो एक किलो मीठा चढ़ाऊंगी। मैं प्रसाद चढ़ाने जा रही हूँ। उसकी आंख खुली, सामने पिता थे। बाप की डांट का इतना बुरा लगता है। लेकिन बाप हूं डांटना तो मेरा अधिकार है। मेरा बाप तो लाठी से मारता था। खैर ये रहे पांच सौ रुपये कल इन्टरव्यू देने बाहर जाना है, याद है ना। ये कहकर पिता ने रुपये उसके पास रखे दिये और ऑफिस जाते-जाते कहा। नहीं भी लगी तो चिन्ता मत करना। किसी प्राइवेट स्कूल में नौकरी कर लेना। जितना मिले ठीक। मेरी तनख्वाह है। रिटायरमेंट के बाद पेंशन है, सब हो जायेगा। चिन्ता मत करना। लड़की वालों को लगना तो चाहिए कि लड़का काम करता है। बिल्कुल बेरोजगार को कौन लड़की देगा। कल को तेरी शादी भी तो करनी है।

वह उठा और इन्टरव्यू की तैयारी में लग गया।

पता : पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

स्वामी श्रद्धानन्द जी सामाजिक क्षेत्र में

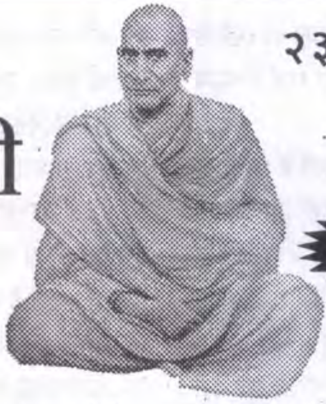

२३ दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष

प्रेरणात्मक

- महात्मा चैतन्यमुनि

जिला जालन्धर के पूर्वी कोने पर सतलुज नदी के किनारे तलवन नाम का एक उपनगर है वहां लाला नानकचन्द जी के घर २३ फरवरी १८५७ को एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम तो बृहस्पति रखा गया मगर इसी बालक ने बाद में मुंशीराम तथा स्वामी श्रद्धानन्द नाम से ख्याति अर्जित की। कुसंग तथा अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के कारण मुंशीराम मांस, मदिरा, जुआ, शतरंज, हुक्का तथा दुराचारादि व्यसनों में फंस गए। कुछ घटनाएँ ऐसी भी हुई जिनके कारण उन्हें मत, मजहब आदि से घृणा हो गई तथा उनके भीतर नास्तिकता के भाव घर कर गए। श्रावण १४ संवत् १९३६ के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी बरेली पधारे। अपने पिता के आग्रह पर मुंशीराम उनका प्रवचन सुनने के लिए गए तथा अपनी अनेक शंकाओं का निवारण किया और न केवल पक्के आस्तिक बने बल्कि समस्त बुराईयों को धीरे-धीरे त्याग दिया। इसके लिए उन्होंने अपनी पुस्तक **'कल्याण मार्ग का पथिक'** के प्रारंभ में ही **'ऋषि दयानन्द के चरणों में सादर समर्पण'** के अन्तर्गत महर्षि के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है। मुंशीराम जी के जीवन परिवर्तन में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शिवदेवी जी की भी प्रेरणा एवं सहयोग रहा।

महात्मा मुन्शीराम जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उन्होंने शिक्षा एवं समाज सुधार के क्षेत्र में तो कार्य किया ही मगर इसके साथ ही दलितोद्धार, आर्य एवं हिन्दू संगठन, राष्ट्रभाषा हिन्दी, शुद्धि आन्दोलन के साथ-साथ राजनीति के क्षेत्र में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने अनेक पुस्तकों का लेखन कार्य भी किया और पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। वे एक निर्भय संन्यासी थे। उन्होंने अपने जीवन में असत्य, अन्याय और अत्याचार का सदा ही खुलकर विरोध किया, चाहे स्वयं कितने की कष्ट क्यों न सहने पड़े। उन्होंने अपनी अन्तरात्मा के विरूद्ध कभी कोई कार्य नहीं किया। उन्होंने अपने जीवन को आत्मना नियमितता और तपोनिष्ठता के साथ दृढ़ता से जोड़ दिया था। सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्हें परमपिता परमात्मा पर अटूट श्रद्धा एवं विश्वास था। अपने इन्हीं गुणों के कारण उन्होंने अनेक अविस्मरणीय कार्य किए।

स्वामी श्रद्धानन्द जी स्त्री शिक्षा के मात्र पक्षधर ही नहीं थे बल्कि उसके लिए उन्होने सक्रिय प्रयास भी किए। जालन्धर में कन्याओं को पढ़ने के लिए पाठशाला खुलवाना उनका क्रान्तिकारी कदम था। उन्होने उन दिनों प्रचलित बाल-विवाह की कुप्रथा को समाप्त करने का बीड़ा भी उठाया क्योंकि इस कुप्रथा के कुपरिणाम के सम्बन्ध में वे लिखते हैं - मैने उसी समय (अपना विवाह होने पर) बाल-विवाह की कुप्रथा के भयंकर परिणाम अनुभव किए थे और इसलिए आर्यसमाज में प्रवेश करते ही मैंने इसके संशोधन में बड़ा भाग लिया। मेरा निश्चय है कि यदि उस समय विवाह का ख्याल ही मेरे अन्दर न डाला जाता तो काशी से ग्रेजुएट बनकर मैं किसी अन्य ऊँची दशा में चला जाता, कम से कम यदि धर्मपत्नी की आयु सोलह वर्ष की होती और परस्पर की प्रसन्नता से आंखे खोलकर विवाह होता तो मैं उस अन्धकूप में गिरने से बच जाता, जिसमें आगामी दो-अढ़ाई वर्ष गिरा रहा। पर्दा प्रथा दूर करने के लिए भी पहले उन्होंने अपनी धर्मपत्नी से पर्दा उतरवाकर उन्हें पढ़ना आरम्भ किया था। बाल-विधवाओं की दयनीय दशा देखकर वे अत्यधिक द्रवित

हो उठते थे। आन्ध्रप्रदेश में जब उन्होंने एक विधवाश्रम का निरीक्षण किया तो उनके मुख से ये शब्द निकले- 'भगवान की सृष्टि के इन कोमल फूलों के प्रति हिन्दू समाज ने बहुत बड़ा पाप किया है। उसको आज नहीं तो कल इस पाप का प्रायश्चित करना ही होगा। यह सच है जहां देवियों का सम्मान होता है, वहां ही दिव्य गुणों का विकास संभव है।'

वे जन्मना-जाति-प्रथा एवं छूत-छात को देश के लिए एक बहुत बड़ा अभिशाप मानते थे। इसलिए इस कुप्रथा को समाप्त करने के लिए भी उन्होंने सक्रियता के साथ कार्य किया। जात-पात तोड़क मण्डल के प्रधान श्री सन्तराम बी.ए. जी लिखते हैं - जाति-भेद जैसे भारत के महारोग पर क्रियात्मक कुठाराघात करने के कारण ही मेरे हृदय में स्वामी श्रद्धानन्द जी के लिए बहुत ऊंचा स्थान है। कारण यह कि आज भी बड़े-बड़े सामाजिक एवं राजनैतिक नेताओं में जात-पांत को तोड़ने का साहस नहीं देखता। यदि कांग्रेस और आर्यसमाज ने स्वामी श्रद्धानन्द का अनुसरण किया तो देश के विभाजन और विध्वंस की नौबत कभी न आई होती। आज नहीं, कुछ वर्ष बाद भारतवासी अनुभव करेंगे कि उस कल्याण मार्ग के पथिक श्रद्धानन्द ने जाति-भेद पर आक्रमण करके कितना पुण्यमय और महान कार्य किया। सन्तराम बी.ए. जी अन्यत्र लिखते हैं - कुछ मित्रों के साथ मिलकर मैने सन् १९२२ में लाहोर में जात-पात तोड़क मण्डल स्थापित किया था। हमें चारों ओर से हतोत्साह किया जाता था। मुझे पूरी तरह स्मरण है कि स्थानीय आर्य नेताओं के निष्क्रिय प्रतिरोध के कारण एक वर्ष हमें अपने वार्षिक सम्मेलन के लिए कोई प्रधान मिलना कठिन हो गया था। स्वामी श्रद्धानन्द उस वर्ष लाहोर आर्यसमाज से कुछ अप्रसन्न थे। उन्होंने उसके वार्षिक उत्सव पर आने से इन्कार कर दिया पर जात-पात तोड़क मण्डल की प्रार्थना पर उन्होंने हमारा प्रधान बनना स्वीकार करके हमारी मांन-रक्षा की थी। सभापति के आसन से बोलते हुए तब उन्होंने कहा था- मुझे पता नहीं था कि आर्यसमाजी लोग जात-पांत तोड़ने से इतना भयभीत है। आज इस प्लेटफार्म पर एक भी आर्य नेता को न देख मुझे दुःख हो रहा है। मुझे ऐसा पता होता तो मैं गुरुकुल न बनाकर जात-पांत तोड़क मण्डल ही बनाता। उनकी इस अमर वाणी से मण्डल के कार्यकर्त्ताओं को बड़ा भारी उत्साह मिला। वे सदा हमारे लिए प्रकाश-स्तम्भ बने रहे। उन्होंने अमृतसर में हुई महासभा (कांग्रेस) के अपने स्वागतकारिणी समिति के अध्यक्षीय वक्तव्य में निम्नलिखित चार अत्यन्त महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए थे -

१. 'लन्दन में भारत की रिफार्म-स्कीम कमेटी के सामने ईसाई-मुक्ति फौज के बूथटकर साहब ने कहा था कि भारत के साढ़े छः करोड़ अछूतों को विशेषाधिकार मिलने चाहिए और उसके लिए हेतु दिया था - क्योंकि वे भारत में ब्रिटिश गवर्नमेण्ट रूपी जहाज के लंगर है।' इन शब्दों पर गहरा विचार कीजिए और सोचिए कि किस प्रकार आपके साढ़े छः करोड़ भाई, आपके जिगर के टुकड़े, जिन्हें आपने काटकर फैंक दिया है, किस प्रकार भारत माता के साढ़े छः करोड़ पुत्र एक विदेशी गवर्नमैण्ट रूपी जहाज लंगर बन सकते हैं। मैं सब बहिनों और भाईयों से एक याचना करूंगा। इस पवित्र जातीय-मन्दिर में बैठे हुए अपने हृदयों को मातृभूमि के प्रेम-जल से शुद्ध करके प्रतिज्ञा करो कि - 'आज से वे साढ़े छः करोड़ हमारे लिए अछूत नहीं रहे बल्कि हमारे बहिन और भाई हैं। उनकी पुत्रियां और उनके पुत्र हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे। उनके गृहस्थ नर-नारी हमारी सभाओं में सम्मिलित होंगे। हमारे स्वतन्त्रता प्राप्ति के युद्ध में वे हमारे कन्धे से कन्धा जोड़ेंगे और हम सब एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए ही अपने जातीय उद्देश्य को पूरा करेंगे। हे सज्जन पुरुषों ! मुझे आशीर्वाद दो कि परमेश्वर की कृपा से मेरा यह स्वप्न पूरा हो।'

२. केवल इतनी आवश्यकता है कि आर्य लोग अपने आचरम को उत्तम बनाकर दीपक बने ताकि उनसे दूसरे दीपक जलाए जा सके।

३. सभी प्रान्तों में मैंने देखा है कि हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे पर सस्नेह करने लगे हैं, किन्तु मुसलमान और सिक्ख तो सामाजिक दृष्टि से संगठित हैं, किन्तु हिन्दू सामाजिक दृष्टि से बिखरे हुए हैं। मेरी सम्मति में इसका उपाय एक ही है कि हिन्दू नेता हिन्दू समाज को सामाजिक दृष्टि से संगठित करें और मुसलमान नेता

खिलाफत की अपेक्षा स्वराज की प्राप्ति पर अधिक ध्यान दें।

४. यदि देश और जाति को स्वतन्त्र देखना चाहते हो तो स्वयं सदाचार की मूर्ति बनकर अपनी सन्तान में सदाचार की बुनियाद रखें। जब सदाचारी ब्रह्मचारी शिक्षक हों और कौमी ही शिक्षा पद्धति, तब ही कौम की जरुरत पूरी करने वाले नौजवान निकलेंगे, अन्यथा अपनी सन्तान विदेशी विचारों और विदेशी सभ्यता की गुलाम बनकर रहेगी।

उन्होंने ९ दिसम्बर १९२१ को गान्धी जी के नाम एक पत्र लिखा जिसमें अछूतों के उत्थान की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया गया था। उसी पत्र में वे लिखते हैं - 'अब मैं अपनी सीमित शक्ति से दलित जातियों के उत्थान के कार्य में लगना चाहता हूँ। मैं नहीं समझता कि इन तथाकथित अछूत भाईयों के सहयोग के बिना से स्वराज्य हमें मिलेगा, वह भारत राष्ट्र के लिए किसी भी प्रकार हितकर होगा। दक्षिण के ब्राह्मणों और अब्राह्मणों के बीच के विवादों का अभी हल नहीं निकला है, तथा दलित जातियों को समाज के बृहद् अंश में मिलाने के कार्य में एक भी कदम नहीं उठाया गया है.. साढ़े छः करोड़ अछूत आपसे पृथक हो गए हैं ...', ३० जून १९२२ को कांग्रेस कमेटी के तत्कालीन महामंत्री सरदार बल्लभाई पटेल जी को एक पत्र में लिखा- 'एक समय था जब महात्मागांधी कांग्रेस के कार्यक्रम में अस्पृश्यता के प्रश्न को सबसे आगे रखे थे।अब मैं अनुभव करता हूँ कि दलित वर्गों की स्थिति को सुधारने का सवाल एक अन्धेरे कोने में डाल दिया गया है। तीन सदस्यों की एक उपसमिति तथाकथित दलित जातियों से सम्बन्धित प्रस्ताव को क्रियान्वित करने के लिए गठित की जाए। इस कार्य के लिए ५ लाख की राशि रक्खी जाए तथा भविष्य में सहायता-विषयक आवेदन पत्रों पर विचार करने का अधिकार इसी उपसमिति को रहे।' एक अन्य पत्र ३ जून १९२२ में वे लिखते हैं - 'दलित जातियों की निम्न मांगों को अविलम्ब स्वीकार करना चाहिए - (अ) उन्हें अन्य जातियों के नागरिकों के साथ एक ही दरी पर बैठने की आज्ञा मिलनी चाहिए। (आ) सामान्य कूंए से जल भरने का भी उन्हें अधिकार होना चाहिए (इ) उनके बच्चों को राष्ट्रीय स्कूलों और कालेजों में प्रवेश मिले तथा उन्हें तथाकथित उच्च जातियों के विद्यार्थियों से निर्बाध रूप से मिलने-जुलने का अवसर प्राप्त हो। जब उन्होने देखा कि कांग्रेस दलितोद्धार का कार्य पूरी तत्परता के साथ सही नहीं कर पा रही है तो उन्होने कांग्रेस द्वारा गठित समिति से स्वयं को अलग करके अलग से अखिल भारतीय दलितोद्दार सभा की स्थापना की। वे केवल वाकशूर नहीं थे बल्कि जो कहते थे वह करके भी दिखते थे। उन्होंने अपनी पुत्री अमृतकला का विवाह सम्बन्धियों, इष्टमित्रों तथा कुछ आर्यसमाजियों के विरोध के बावजूद जाति-बन्धन तोड़कर किया था। यही नहीं बल्कि अपने पुत्रों पण्डित हरिश्चन्द्र विद्यालंकर और पण्डित इन्द्रवाचस्पति का विवाह भी जाति-बन्धन तोड़कर ही हुआ था।

पता : महादेव, सुन्दरनगर, १७४४०१ हिमाचल प्रदेश

जोगी का फेरा

महात्मा चैतन्यमुनि

माया पर इतराना छोड़ दे बन्दे।
क्यों करता है तू ये काले धन्धे॥
यही रहेंगे सब महल अटारी।
तू कर आगे चलने की तैयारी।
पैदा कर ले सुकर्मों की पूंजी,
जो बनेगी तेरी अन्तिम सवारी॥
अब समेट ले तू अपने ये हथकण्डे।
माया पर इतराना छोड़ दे बन्दे॥ ....
राख बनेगी इक दिन सुन्दर काया,
धरी धराई रह जाएगी ये माया॥
बान्धकर बिस्तर चलना होगा,
चार दिनों को है यहां तू आया॥
काट ले मनवा ये स्वार्थ के फन्दे।
माया पर इतराना छोड़ दे बन्दे॥
सदा यहां रहा न किसी का डेरा,
ये जग तो बस है जोगी का फेरा।
मेरा मेरी तू क्यों करता है,
तेरा तन भी तो नहीं है तेरा॥
बोल चैतन्य कभी बोल न मन्दे।
माया पर इतराना छोड़ दे बन्दे॥ ....

पता : महादेव, सुन्दरनगर, १७४४०१ हिमाचल प्रदेश

पुण्य स्मरण

जगतराम आर्य

अमर शहीद

पं. रामप्रसाद बिस्मिल

१६ दिसंबर सन् १९२७ ई. सोमवार प्रातः साढ़े छः बजे गोरखपुर जेल से फांसी के तख्ते की ओर जाते हुए शहीद कह उठा। "***मालिक तेरी रजा और तू ही तू रहे, बाकी न मैं रहूं मेरी आरजू रहे। जब तक कि तन में जान, रगो में लहू रहे तेरा ही जिक्र या तेरी ही आरजू रहे।***" तत्पश्चात् शहीद ने अपनी अंतिम इच्छा प्रकट की- "मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूँ।"

इसी प्रकार १६ दिसंबर १९२७ को उन्होंने लिखा :"हे ईश ! भारतवर्ष में शत् बार मेरा जन्म हो,कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।" यह शहीद थे पं. रामप्रसाद बिस्मिल। वे इन्हीं शब्दों को गुनगुनाते हुए फांसी पर चढ़ गए देश के चरणों पर उत्सर्ग हो गए। वे सच्चे देशभक्त थे, साहसी थे, आर्यवीर थे। वे देश के चरणों पर बलिदान होने के लिए एक तारे की भांति उदित हुए थे। एक तारे की भांति ही ये टूट गए। उनकी उदय और अन्त की कहानी एक मंत्र की तरह प्रेरक है, शक्तिदायक है। युग आएंगे और चले जाएंगे पर उनके बलिदान की गाथा सदा प्रेरणा देती रहेगी, सदा एक पवित्र मंत्र की तरह रगों में शांति का संचार करती रहेगी।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म २१ जून १८९७ को पं. मुरलीधर तिवारी (शाहजहांपुर निवासी) के यहाँ हुआ था। मुरलीधर ऊंचे डीलडौल के व्यक्ति थे। बिस्मिल जी की प्रारंभिक शिक्षा उर्दू में सम्पन्न हुई। उन्हें एक मौलबी साहब पढ़ाया करते थे। पर उनका मन पढ़ने लिखने में बिल्कुल नहीं लगता था। वे बड़े उदंड थे। न स्वयं पढ़ते, न दूसरों लड़कों को पढ़ने देते थे। ज्यों-ज्यों वे बड़े होते गए, उनकी उद्दंडता भी बढ़ती ही गई। कभी-कभी अपनी बुरी आदतों के कारण उन्हें अपने पिता के द्वारा अधिक दंडित भी होना पड़ता था। पर संयोग की बात, एक दिन बिस्मिल जी के गांव में आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता सोमदेव जी का आगमन हुआ। बिस्मिल जी उनके सम्पर्क में आए, उनसे प्रभावित हुए और उनके पास आने जाने लगे। सोमदेव जी के कारण बिस्मिल जी के जीवन कायापलट हो गई। वे बुरी आदतों को छोड़कर ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने लगे, प्राणायाम करने लगे। आर्यसमाज विद्वानों के उपदेश सुनने लगे। आर्यसमाज मंदिर में जाकर यज्ञ और हवन आदि करने लगे। ऋषि दयानन्द के लिखे हुए अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने लगे। इससे बिस्मिल जी के शरीर और हृदय, दोनों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। प्राणायाम के द्वारा उनका शरीर सुगठित हो गया। उनके शरीर के अंग-अंग में स्फूर्ति का सागर उमड़ने लगा। उन्होंने घुड़सवारी, तैराकी, और साइकिल चलाने में अनोखी दक्षता प्राप्त की। दौड़ने और पैदल चलने में वे बड़े तेज थे। साठ-साठ मील तक पैदल चले जाते थे, पर उनमें नाममात्र की भी थकावट नहीं पैदा होती थी। शरीर की ही भांति उनका हृदय भी अधिक बलवान हो गया था। ऋषि दयानन्द की देशभक्ति का बिस्मिल जी पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। वे देश की बातें सोचने लगे। देश के लिए उनके हृदय में भक्ति पैदा हो गई। वे देशभक्तों के चरित्र पढ़ने लगे, देशप्रेम से भरी हुई कविताओं का पाठ करने लगे। वे जब कविताओं का

सस्वर पाठ करने लगते, तो वातावरण में एक रस सा पैदा हो जाता था। बिस्मिल जी को ऊंची शिक्षा प्राप्त करने का सुयोग नहीं प्राप्त हो सका था । शिक्षा के नाते उन्होने सामान्य रुप से उर्दू और अंग्रेजी पढ़ी थी । उन्होने एन्ट्रेस की परीक्षा तो नहीं पास की थी, पर एन्ट्रेस तक शिक्षा अवश्य प्राप्त की थी । उन्होने स्वतंत्र रुप से पढ़कर बाद में उर्दू और अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त कर लिया था । उर्दू में वे शायरी करते थे । उनकी कविताएँ बड़ी प्रभावपूर्ण और जोशीली होती थी। वे एक अच्छे वक्ता और सुलेखक भी थे । उन्होने कई पुस्तकों की रचना भी की । उर्दू और अंग्रेजी के अतिरिक्त उन्हें बंगला और हिन्दी का भी ज्ञान था।

ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र और सोमदेव जी की प्रेरणा से ही बिस्मिल जी के हृदय में देश प्रेम का अंकुर फूटा । जिन दिनों वे नवीं कक्षा में पढ़ रहे थे, उन्हें स्वयंसेवक के रुप में सेवा समिति में काम करने का अवसर मिला । सेवा समिति कार्य करते हुए उनकी दृष्टि परसेवा की ओर आकर्षित हुई । देश की गुलामी से उनके हृदय में दर्द पैदा होने लगे । वे हृदय से यह अनुभव करने लगे कि व्यक्ति का दुःख देश का दुःख अंग्रेज सरकार के कारण है । फलतः वे अंग्रेज सरकार को विनष्ट करने के सम्बन्ध में सोच विचार करने लगे। इन्हीं दिनों बिस्मिल जी को स्वर्गीय गेंदालाल दीक्षित से क्रांतिकारी दल का पता लगा । दीक्षित जी के दल का केन्द्र मैनपुरी था । बिस्मिल जी की अवस्था उन दिनों केवल उन्नीस वर्ष की थी और वे हाई स्कूल में पढ़ रहे थे, पर वे इसी कच्ची उम्र में ही दीक्षित जी के दल में सम्मिलित हो गए । बिस्मिल जी अपनी कर्मठता और लगन से थोड़े ही दिनों में दीक्षित जी के दल के प्रमुख सदस्यों में से बन गए । बंगाल के क्रांतिकारियों से भी उन्होने संपर्क स्थापित किया । वे बड़ी लगन से अपने दल के लिए अपने दल के साथियों के लिए अस्त्र-शस्त्र और धन एकत्र करने लगे । उनके अस्त्र-शस्त्र और धन संग्रह के संबंध में कई रोचक और साहसपूर्ण कहानियाँ कही जाती है ।

बिस्मिल जी डकैतियों के द्वारा दल के लिए धन एकत्र किया करते थे । वे सरकारी खजानों, डाकखानों और बैंकों को लूटने के लिए भी प्रोत्साहन दिया करते थे । दल के लिए धन संग्रह करने के उद्देश्य से ही उन्होने १९२५ ई. में ९ अगस्त को काकौरी में ट्रेन डकैती करके अपने अद्‌भुत साहस का परिचय दिया था । काकारो लखनऊ के पास एक स्टेशन है । १९२५ ई. की ९ अगस्त का दिन था । संध्या के लगभग ८ बजे रहे थे । ट्रेन हरदोई से लखनऊ जा रही थी । उस पर सरकारी खजाना था बिस्मिल जी को पहले से ही यह बात ज्ञात हो चुकी थी । उन्होंने पहले से ही अपने साथियों से विचार-विमर्श करके उस सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई थी यद्यपि यह सारा काम बड़ी चतुराई और होशियारी के साथ किया गया, फिर भी सरकारी जासूस विभाग को पता चल ही गया । परिणामस्वरुप गिरफ्तारियां की जाने लगी । एक-एक करके ट्रेन डकैती में सम्मिलित क्रांतिकारी बन्दी बनाए जाने लगे । बिस्मिल जी भी २५ दिसंबर को गिरफ्तार कर लिए गए ।

बिस्मिल जी और उनके साथियों पर मुकदमा चलाया गया । लगभग दो वर्ष तक मुकदमा चला, पर कुछ फल न निकला। बिस्मिल जी को फांसी की सजा सुनाई गई । फांसी के पहले बिस्मिल जी के माता-पिता जेल में उनसे मिलने के लिए गए । माता-पिता के साथ उनका छोटा भाई भी था । बिस्मिल जी ने जब मां को देखा, तो उनकी आंखे डबडबा गई । अश्रु बूंदे रह-रहकर आंखों से टपकने लगी । बिस्मिल जी की आंखों में अश्रु बूंदे देखकर उनकी माता जी बोल उठीं - मैं समझती थी, तुमने अपने आप पर विजय प्राप्त की है, किन्तु यहां तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है । जीवनपर्यन्त देश के लिए आंसू बहाकर अब अंतिम समय में मेरे लिए रोने बैठे हो।

इस कायरता से क्या होगा ? तुम्हें वीर की तरह हंसते हुए प्राण देते देखकर मैं अपने आपको धन्य समझूंगी। मुझे गर्व है है कि इस गए बीते जमाने में मेरा पुत्र देश की वेदी पर अपने प्राण दे रहा है। मेरा काम तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा करना था। उसके बाद तुम देश की चीज बन गए थे, सो उसके काम आ गए। मुझे जरा भी दुःख नहीं है। बिस्मिल जी अपनी मां के ओजस्वी शब्दों को सुनकर चुप न रह सके। वे आंसू पोंछते हुए बोल उठे - "माँ, तुम मेरी मां हो। तुम मेरी जननी होकर भी नहीं समझ सकी। माँ, मैं मृत्यु से भयभीत होकर नहीं रो रहा हूँ। जिस प्रकार यदि घी को आग के पास कर दिया जाए तो वह पिघल उठता है उसी प्रकार मां, तुम्हें देखकर मेरी आंखों से कुछ अश्रु बूंदे निकल पड़ी। विश्वास रखों मां, मैं मृत्यु से संतुष्ट हूँ, पूर्णरुप से सन्तुष्ट हूँ।" गोरखपुर जेल में १९२७ ई. की १९दिसंबर का प्रातःकाल था। बिस्मिल जी तीन बजे ही उठ पड़े। उन्होने शौचादि से निवृत्त होकर संध्या की हवन यज्ञ किया। फिर वे गुनगुनाते हुए फांसी के तख्ते की ओर चल पड़े। वे गुनगुनाते हुए ही फांसी के फन्दे पर चढ़ गए। आर्यसमाजी होने के नाते उनका अन्तेष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ हुआ। उन्होने फांसी के तख्ते पर चढ़कर जोर से आवाज ऊँची की - **"अंग्रेज सरकार का नाश हो, अंग्रेज सरकार का नाश हो।"**

सज्जन पुरुषों की एकरूपता

घृष्टं घृष्टं पुनरपि पुनश्चन्दनं चारुगन्धं, छिन्नं छिन्नं पुनरपि पुनः स्वादु चैवेक्षुकाण्डम् ।
दग्धं दग्धं पुनरपि पुनः काञ्चनं कान्तवर्णं, न प्राणान्ते प्रकृति विकृतिर्जायते चोत्तमानाम् ॥

भावार्थ :- सुख और दुःख जैसे साथ-साथ रहते हैं - तथैव उत्तम और अधम पुरुष भी इस वसुन्धरा पर एक साथ ही रहते हैं। अधम तो अधम रहते ही है - परन्तु सज्जन पुरुष कभी भी किसी भी विपत्ति के आने पर विचलित नहीं होते। दृष्टिक्षेप कीजिए- आप चन्दन को चाहे कितनी ही बार, बारम्बार क्यों नहीं घिसते चले जावें क्या वह अपनी गन्ध छोड़ देगा ? कदापि नहीं। ऐसे ही आप साँटे (गन्ने) को लीजिए। उसके टुकड़े टुकड़े कर डालिए, बारम्बर काटते ही काटते छीलते चले जाइए क्या वह अपने स्वाद बदल देगा ? कभी नहीं, कभी नहीं। वह तो उत्तरोत्तर अपना मधुर स्वाद ही प्रदान करवाएगा।

और सोने को लीजिए - स्वर्ण को अधिक से अधिक अग्नि में तपाइए। क्या वह अपना सोने का रङ्ग गुण छोड़कर ताम्बे या पीतल में कभी परिवर्तित हो जावेगा ? कभी नहीं। सोना-सोना ही रहेगा अपितु वह तो और चमकेगा। इसी प्रकार उत्तम पुरुषों की प्रकृति स्वाभाविक निश्चलता का प्राणान्त होने पर भी परिवर्तन नहीं होता। उनकी एकरूपता जैसी है - सदैव वैसी ही रहेगी।

- सुभाषित सौरभ

पुण्य स्मरण

८ दिसम्बर पुण्य तिथि पर विशेष

भाई परमानन्द

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

जिस समय अत्याचारी मुगल बादशाह औरंगजेब ने सिखों के नये गुरु तेग बहादुर को निर्ममतापूर्वक दिल्ली में कत्ल करवाया था, उस समय उनके साथ पंजाब के एक ब्राह्मण मतिदास का शरीर आरे से चिरवाकर उसे भी गुरु महाराज के साथ धर्म की वेदी पर बलिदान कर दिया था। जब दशम गुरु गोविन्दसिंह को इन बलिदानों के समाचार मिले तब उन्होने मतिदास के वंशजों को भाई कहकर पुकारा क्योंकि गुरु तेगबहादुर के साथ एक सहोदर भाई की तरह मतिदास ने भी अपने प्राण न्यौछावर किये थे। तब से उस ब्राह्मण मतिदास के वंशज भाई सम्बोधन से ही पुकारे जाने लगे। मुहियाल ब्राह्मणों के इसी पवित्र वंश में भाई परमानन्द का जन्म १८७६ में हुआ। उनके पिता भाई ताराचंद जेहलम जिले के कटियाला ग्राम के निवासी थे।

भाई की प्रारंभिक शिक्षा अपने ग्राम से ही हुई। उसके बाद वे चक्रवाल के मिडिल स्कूल में भर्ती हुए। उनकी उच्च शिक्षा लाहौर में हुई। डी.ए.वी. कालेज लाहौर से उन्होंने बी.ए. किया और कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कालेज से इतिहास में एम.ए. किया।

ऋषियों, महात्माओं तथा महापुरुषों की पवित्र जीवनियों का अवलोकन करने से भली भांति विदित होता है कि उनका जीवन सफल था। सफल जीवन के लिए जिन उत्तम साधनों की परमावश्यकता प्रतीत होती है यह सब पूर्ण रूपेण उनके जीवन में सम्यकतया उपलब्ध होते हैं।

महापुरुषों के जीवन परिचय ग्रहण करने दिव्य गुणों को जानने का अवसर प्राप्त होता है। उनका पुरुषार्थ पूर्ण साधनामय उदार जीवन हमें प्रेरणा प्रदान करता है और उससे प्रेरित होकर हम अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकते है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आर्यसमाज से महापुरुषों के प्रेरक जीवन चरित्रों को हम यहां पर प्रकाशित कर रहे हैं।

सम्पादक

डी.ए.वी. कालेज लाहौर की आजीवन सेवा करने वाले समर्पित व्यक्तियों को मात्र ७५ रुपये मासिक जीविका निर्वाह हेतु मिलते थे। भाई परमानन्द जी कालेज में इतिहास पढ़ाते थे, तथा धर्म प्रचारार्थ पंजाब के नगरों का भ्रमण भी करते थे।

भाई जी के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब उसे पूर्वी अफ्रीका में आर्य धर्म के प्रचारार्थ भेजे जाने का प्रस्ताव आया। सम्भवतः ये आर्यसमाज के प्रथम प्रचारक थे, जो अफ्रीका महाद्वीप में उसे प्रवासी भारतीयों के अनुरोध पर वहां गए। १९०६ में उनका यह प्रथम विदेश प्रवास हुआ। मोम्बासा, नैरोवी, जोहान्सबर्ग, नेटाल आदि स्थानों में धर्म प्रचार करने के उपरान्त ये डर्बन पहुंचे। उन दिनों महात्मा गांधी बैरिस्टर के रूप में, अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों का हितचिन्तन कते हुए। उनके नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे। भाई जी ने महात्माजी से भेंट की। उनके सेवा भाव तथा समर्पणशील व्यक्तित्व से वे अत्यन्त प्रभावित हुए। गांधी जी से उनका मैत्री भाव जीवन पर्यन्त रहा।

अफ्रीका में पर्याप्त समय व्यतीत कर भाई परमानन्द इंग्लैण्ड चले गए। यहां निवास करने वाले महान

क्रांतिकारी देशभक्त पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा से भेंट की। लंदन में श्यामजी ने इंडिया हाऊस की स्थापना कर, उसे देशभक्त भारतीय युवकों तथा विद्यार्थियों के मिलने का एक केन्द्र स्थल बना दिया था। भाईजी की यहां लाला हरदयाल तथा विनायक दामोदर सावरकर आदि युवकों से भेंट हुई जो भारत की स्वतंत्रता की तड़प लेकर इस विदेशी धरती में स्वाधीनता की ज्योति जलाए बैठे थे। भाई परमानन्द ने अपने इंग्लैण्ड निवास के दौरान, ब्रिटिश म्युजियम में संगृहीत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री को देखा। उसके आधार पर उन्होंने भारत के इतिहास को सही सही ढंग से लिखने का मन बनाया। इसी दुर्लभ सामग्री के आधार पर भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उद्भव शीर्षक से एक शोध प्रबंध भी उन्होंने लिखा। लंदन विश्वविद्यालय की एम.ए. की उपाधि के लिए उसे प्रस्तुत किया। किन्तु भारतीय राष्ट्रवाद के सही दृष्टिकोण से लिखे गए इस ग्रन्थ को साम्राज्यवादी प्राध्यापक भला क्यों स्वीकृति देते।

१९०८ में भाई परमानन्द स्वदेश लौट आए। पहले की भांति वे डी.ए.वी. कालेज तथा आर्यसमाज के कार्यों में लग गए। १९०८ में वे दक्षिण भारत में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ निकले। विभिन्न स्थानों पर जाकर सामाजिक जागृति का शंखनाद किया।

१९०७ का वर्ष पंजाब में राजनैतिक उथल पुथल का था। लाला लाजपतराय तथा सरदार अजीतसिंह को देश निकाला दिया गया और आर्यसमाज पर भी अंग्रेज सरकार की एक वक्र दृष्टि पड़ी। सरकार ने भाई जी के विचारों और कार्यकलापों को भी संदेह की दृष्टि से देखा। डी.ए.वी. कालेज के संचालकों ने उनकी सेवाएं समाप्त कर दी। विदेशी सरकार ने उन्हें राजद्रोह के षड़यंत्र में भाग लेने का आरोप लगाकर गिरफ्तार कर लिया। किन्तु उन पर अभियोग चलाकर दण्डित करने में सरकार को सफलता नहीं मिली।

अब भाई परमानन्द ने पुनः विदेश यात्रा पर जाने का निश्चय किया। फ्रांस होते हुए वे न्यूयार्क जा पहुंचे। यहां से उन्होने ब्रिटिश गुयाना के लिये प्रस्थान किया। इस यात्रा में उनकी लाला हरदयाल से पुनः भेंट हुई। दोनों देशभक्तों ने खुलकर विचारों का आदान-प्रदान किया। गुयाना से वे पुनः अमेरिका आए। वहां औषध निर्माण का काम सीखते रहे। १९१४ में वे स्वदेश लौटे। उन्होंने औषध निर्माण करके जीविका चलाने का निश्चय किया। उन्होने लंदन में एकत्रित सामग्री से भारत का इतिहास नामक खोजपूर्ण ग्रन्थ लिखा, किन्तु सरकार ने उसे जब्त कर लिया। यह पुस्तक पाठकों तक नहीं पहुंच पाई।

२२ फरवरी १९२५ को भाईजी को लाहौर षड़यंत्र अभियोग में बंदी बना लिया गया। अभियोग का निर्णय करने के लिए एक विशेष न्यायिक ट्रिब्यूनल का गठन किया गया, जिसके दो अंग्रेज तथा एक भारतीय सदस्य थे। अनुमान तो यह था कि भाईजी को फांसी का दण्ड दिया जाएगा, किन्तु ट्रिब्यूनल के भारतीय सदस्य के आग्रह पर उन्हें आजन्म कारावास की सजा हुई। वे कालापानी भेज दिये गए। इस भीषण दण्ड को भोगते हुए उन्हें कैसी कैसी अमानुविक यातनाएँ झेलनी पड़ी। इसका रोमांचक वर्णन स्वयं भाईजी ने अपनी आत्मकथा में किया है। महात्मा गांधी और भारत भक्त एण्ड्रूज के प्रयत्नो से १९२० में उन्हें कालापानी से रिहा कर दिया गया। वर्षों बाद वे स्वदेश लौटे। उस समय देश में महात्मा गांधी द्वारा चलाए जाने वाले असहयोग आन्दोलन का जोर था। सरकारी स्कूलों और कालेजों का बहिष्कार किया जा रहा था। स्वदेशी भावना को प्रोत्साहन देने के लिए स्थान स्थान पर राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित किये जा रहे थे।

लाहौर में जब महात्मा गांधी की प्रेरणा से नेशनल कालेज खोला गया तो भाईजी को इसका प्रिंसिपल पद दिया गया। **अमर शहीद भगतसिंह ने भी इसी कालेज में भाईजी से देशभक्ति का पाठ पढ़ा था।** असहयोग के साथ साथ महात्मा गांधी ने खिलाफत की तहरीक का समर्थन कर मुसलमानों का राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग लाने का प्रयास किया, किन्तु जब टर्की में कमाल पाशा ने सत्ता संभाली और खिलाफत का सामना चूर चूर हो गया तो देश में साम्प्रदायिक दंगों की आग भड़क उठी। उस समय मुस्लिम साम्प्रदायिकता के तूफान का मुकाबला करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि तथा हिन्दू संगठन पर बल दिया। लाला लाजपतराय तथा मदनमोहन मालवीय जैसे हिन्दू निष्ठावाले नेताओं ने हिन्दू महासभा को शक्तिशाली बनाने पर जोर दिया।

भाई परमानन्द ने देश की राजनैतिक स्थिति तथा कांग्रेस की अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की नीति का भली भांति विश्लेषण किया । वे इस नतीजे पर पहुंचे कि यदि भारत में हिन्दू हितों की रक्षा करके इस विशाल समाज को संगठित नहीं किया जाता तो देश का भविष्य अंधकारमय ही रहेगा। अतः वे अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ हिन्दू महासभा के कार्यक्रमों को सफल बनाने में जुट गए।

१९३१ में वे केन्द्रीय असेम्बली के लिए चुन लिये गए। १९३४ में अजमेर में आयोजित हिन्दू महासभा के अधिवेशन के अध्यक्ष पद के लिए भाईजी को चुना गया। इस पद से अपना भाषण देते हुए उन्होने देश की राजनैतिक परिस्थिति का लेखा जोखा किया। हिन्दू महासभा को सुदृढ़ बनाने के लिए समस्त देश का भ्रमण किया। १९३५ में महासभा की अध्यक्षता के लिए जब बर्मा के बौद्ध भिक्षु उत्तम को चुना गया तो यह सिद्ध हो गया कि हिन्दू महासभा केवल उच्च वर्गों के हिन्दुओं का ही प्रतिनिधित्व नहीं करती, अपितु इसमें बौद्ध, जैन, सिख आदि उन सभी सम्प्रदायों का ख्याल है जो हिन्दू नाम को व्यापक अर्त में स्वीकार कर रहे हैं तथा जिनकी आर्य संस्कृति में आस्था है।

१९३७ में जब वीर सावरकर को काला पानी से रिहाई मिली तो उन्हें भी हिन्दू महासभा में आने के लिए कहा गया। यद्यपि पं. नेहरु और राजगोपालाचार्य आदि नेताओं ने सावरकर को कांग्रेस में सम्मिलित होने का आग्र किया था, किन्तु हिन्दुवादी विचारधारा के पोषक और प्रचारक सावरकर के लिए हिन्दू महासभा में प्रविष्ट हो जाने पर भाईजी को दुगुना बल मिल गया। वे अपनी विचारधारा का प्राणपण से प्रचार करने लगे।

इसी बीच देश की राजनैतिक स्थिति में अनेक परिवर्तन आए । अन्ततः १५ अगस्त को देश को अधूरी आजादी मिली । इस समय तक भाईजी भी शारीरिक और मानसिक दृष्टि से बहुत क्षीण और दुर्बल हो गए थे। ८ दिसम्बर १९४७ को उनका निधन हो गया। उन्होंने अविभाजित भारत की स्वतंत्रता की आशा की थी, जो सफल नहीं हुई।

पता : ८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर

कविता

"आप अपनी जिन्दगी से प्यार कीजिये"

अधिक नहीं आप थोड़ा ही कीजिये
आप अपनी जिन्दगी से प्यार कीजिये
सूखे पतझड़ के हवा हो गये
भाव प्रकृति के सारे वासन्त हो गये
सरसों ने धरती पे पीले बिस्तर बिछाये
धरती के फूल शबनम से नहा के हैं आये
वसन्त सा इस जिन्दगी को निखार दीजिये
आप अपनी .... ।
खुशबू की तरह हर हृदय में फैल जाइये
अपने व्यवहार से सबको आप अपना बनाईये
खुशियां हर हृदय को साथी सदा बांटते रहें
दुखों की खाई स्नेह से सदा पाटते रहें
वासन्ती शांति मन को भी करार दीजिये
आप अपनी .... ।
आओ विचारे सारे साथी मिल के बैठ के
क्या मिलेगा यह बता अकड़ के ऐंठ के
नम्र और हसीन जिन्दगी की शाख हो
स्नेह और प्यार जगे सेवा भाव साथ हो
मान पाने के लिये आप सत्कार कीजिये
आप अपनी .... ।
भारत माँ की गोद में खुशी है वसन्त है
हमारी कामना का नहीं होता अन्त है
'मोहन' सारे पाते हैं माँ के भण्डार से
वंचित कोई रहता नहीं माँ के दुलार से
मन से सदा माँ को नमस्कार कीजिये
आप अपनी जिन्दगी से प्यार कीजिये ।।

रचयिता- मोहनलाल चड्डा,
पता - एचआईजी-१७३, हुडको, भिलाई

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी चिकित्सा से प्रोस्टेट ग्रन्थि का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

प्रोस्टेट एक छोटी सी ग्रंथि होती है, जिसका आंकार अखरोट के बराबर होता है। यह पुरुष के मूत्राशय के नीचे और मूत्रनली के आस-पास होती है। ५० वर्ष की आयु के बाद बहुधा प्रोस्टेट ग्रन्थि का आकार बढ़ने लगता है। इसमें पुरुष के सेक्स हार्मोन प्रमुख भूमिका होती है। जैसे ही प्रोस्टेट बढ़ती है मूत्र नली पर दबाव बढ़ता है और पेशाब में रुकावट की स्थिति बनने लगती है। पेशाब पतली, धार में थोड़ी-थोड़ी मात्रा में लेकिन बार-बार आता है, कभी-कभी पेशाब टपकता हुआ बूंद बूंद जलन के साथ भी आता है। कभी-कभी पेशाब दो फाड़ में जाता है। रोगी मूत्र रोक नहीं पाता है। रात को बार-बार पेशाब के लिये उठना पड़ता है जिससे नींद में व्यवधान पड़ता है।

यह रोग ७० वर्ष की आयु के बाद उग्र हो जाता है और पेशाब पूरी तरह रुक जाने के बाद डाक्टर केथेटर की नली लगाकर यूरिन बेग में मूत्र करने का इंतजाम कर देते हैं। बह देखने में आता है कि ६० के पार ५०% पुरुषों में इस रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं जबकि ७०-८० की आयु के लोगों में ९०% पुरुषों में यह रोग प्रबल रुप में दिखाई देता है।

प्रोस्टेट वृद्धि के लक्षण -

(१) पेशाब करने में कठिनाई महसूस होती है।

(२) पेशाब की धार चालू होने में विलंब होना।

(३) मूत्राशय पूरी तरह खाली नहीं होता, मूत्र की कुछ मात्रा मूत्राशय में शेष रह जाती है। इस शेष रहे मूत्र में रोगाणु पनपते हैं, जो किडनी में खराबी पैदा करते हैं।

(४) ऐसा प्रतीत होता है कि पेशाब की जोरदार हाजत हो रही है लेकिन बाथरुम जाने पर पेशाब की कुछ बूंदे निकलती है या रुक-रुक कर पेशाब होता है।

(६) पेशाब में जलन लगती है।

(७) पेशाब कर चुकने के बाद भी पेशाब की बूंदे टपकती है, याने मूत्र पर कंट्रोल नहीं रहता।

(८) अंडकोष में दर्द उठता रहता है।

(९) संभोग में दर्द के साथ वीर्य छूटता है।

होमियो उपचार : होमियों औषधि बढ़े हुये प्रोस्टेट ग्लैण्ड के उपचार काफी कारगर सिद्ध हुई है। कई रोगी इलाज से ठीक हुये हैं। कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

होमियों औषधियाँ :- प्रमुख रुप से अर्निका, नक्स, सैबाल सेरुरुटा, पल्साटिला, लाइको पोडियम आदि लक्षणों के आधार पर अनुभवी चिकित्सक के सलाह से ली जा सकती है। **परहेज :-** शराब, मांसाहार, मसाले वाली चीजें नहीं खाना चाहिए।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, भारतमाता स्कूल के सामने, तलमले काम्पलेक्स, टाटीबंध रायपुर (छाग.)

भगवत् कथा

दिनांक ८ जनवरी से १० जनवरी २०१६

स्थान : दयानन्द सेवाधाम, डी.एल.एस. कालेज के पास, अशोक नगर, चाँटीडीह, बिलासपुर

: कथा वाचक :

महात्मा चैतन्यमुनि जी

(सुंदरनगर हि.प्र.)

संगीता आर्या

वैदिक भजनोपदेशिका, सहारनपुर (उ.प्र.)

विशेष आमंत्रित विद्वान्

आचार्य अंशुदेव आर्य

प्रधान, छ.ग.प्रा.आ. प्रति. सभा

आयोजक : आर्यसमाज गोंड़पारा, बिलासपुर

महंगी दुनिया

- विनोद कुमार पण्डा

हो गई दुनिया महंगी देखो बढ़ गया सबका मोल।
लड़के वाले मांगेगे अब दहेज में पेट्रोल॥

☆

अब किसी के घर में पैदा बेटी अगर हो जाए।
बाप बेचारा चिंता में ही जीते जी मर जाए॥

☆

गुनाह हो गया पैदा करना बेटी जग में प्यारे।
दहेज का कुत्ता हाथी बन गया इस महंगाई के मारे॥

☆

बाप का सीना फट जाए जब घर में बजेगा ढोल।
हो गई दुनिया महंगी देखो बढ़ गया सबका मोल॥

☆

धनी तो मरता धन के ऊपर गरीब का बुरा हाल।
मर गए लाखों भूखमरी से जब मिली ना रोटी दाल॥

☆

जीवन भर कड़ी धूप में करके मेहनत और मजदूरी।
कर ना पाए अपने घर की सारी जरुरत पूरी॥

☆

ऐसे कई लाचार शख्स ने पीया जहर का घोल।
हो गई दुनिया महंगी देखो बढ़ गया सबका मोल॥

☆

घर का चुल्हा जले अब कैसे गैस भी हो गई महंगी।
नेताओं की बल्ले-बल्ले जनता हो गई तंगी॥

☆

महंगी भिंडी महंगा आलू महंगे बैगन प्याज।
इतनी महंगी हो गई दुनियां मूल से महंगा ब्याज॥

☆

गरीब की सुनी थाली देख, नेता अब तो आंखे खोल।
हो गई दुनियां महंगी देखो बढ़ गया सबका मोल॥

पता : मु. कंठीपाली (बरमकेला), जिला-रायगढ़ (छ.ग.)

एक अविस्मरणीय दृश्य

'पहले मुझको गोली मारो'

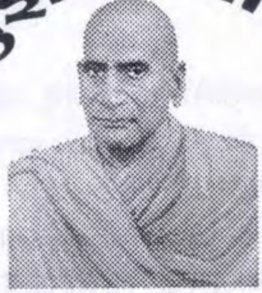

ब्रिटिश तंत्र की तानाशाही के विरुद्ध आन्दोलन।
का विशाल जन जुलूस निकाला स्वयं किया संचालन॥
अहा ! चांदनी चौक दृश्य वह नयनों में छा जाता।
जुलूस रोकता सैनिक दल, संगीनों को चमकाता॥
और सिंह गर्जना वह, कानों में है गहराती।
पहले मुझको गोली मारो, खोल खड़ा था छाती॥
वह निर्भीक, सुदृढ़ जननेता श्रद्धानन्द हमारा।
त्याग, समर्पण, जनसेवा हित जिसने तन था धारा॥
ओजपूर्ण मुखमण्डल, गर्जन का प्रभाव गहराया।
जनता के तन, मन में अद्‌भुत अमित जोश भर आया॥
संन्यासी का प्रखर तेज, तप देख झुकी संगीने।
रायफलों की नलियों में मुख जमीं ओर कर दी ने॥
रुद्ध मार्ग खुल गया, जुलूस ने आगे कदम बढ़ाया।
वृहद भीड़ ने आर्य तुम्हारे जय जयकार लगाये॥
धन्य धन्य संकल्प, सुदृढ़ साहस नेतृत्व तुम्हारा।
मन श्रद्धानन्दी चरणों में करता नमन हमारा॥
अहा ! दृश्य वह जब भी मेरे नयनों में घिर जाता।
मन मेरा श्रद्धा से श्रद्धानन्द के प्रति भर जाता॥

- दयाशंकर गोयल,
१५५४-डी, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

समाचार प्रवाह

तुलाराम आर्य माध्य. विद्यालय लवन एवं आर्यसमाज मठपारा दुर्ग में छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का भव्य सम्मान

लवन । दिनांक २ नवम्बर २०१५ को दानवीर तुलाराम आर्य सभा बाड़ा लवन में सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य हाईस्कूल प्रांगण में नवनिर्वाचित सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव का भव्य सम्मान समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सभा के पदाधिकारी श्री दयाराम वर्मा उपप्रधान रायपुर परिक्षेत्र, श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री, श्री दिलीप आर्य उपमंत्री (कार्यालय) एवं मुख्य अधिष्ठाता, श्री चतुर्भुज आर्य उपमंत्री रायपुर परिक्षेत्र, श्री अजय ताम्रकार पार्षद वार्ड नं. ४ लवन, श्री देवीलाल बार्वे, श्री राजू मिश्रा पार्षद वार्ड नं. १३, श्री बुधराम धीवर पार्षद वार्ड नं. १२, श्री पारसराम ताम्रकार पार्षद वार्ड नं. ११, श्री रामकुमार वर्मा प्रबंधक सभा बाड़ा लवन, श्री महेश प्रसाद तिवारी सहायक इसके अलावा विद्यालय की प्राचार्य श्रीमति मंदाकिनी ताम्रकार, शिक्षक-शिक्षिकाओं में कु. उषा वर्मा, कु. भगवती वर्मा, श्रीमती कविता मानिकपुरी, कु. मनीषा वैष्णव, श्रीमति विजयलक्ष्मी मानिकपुरी, श्रीमती राधा पाण्डे, कु. ज्योति सिंह, कु. मीनाक्षी साहू, कु. वर्षा तिवारी, कु. दहुति वर्मा, श्री शिवनन्दन निषाद, श्रीमति पुन्नीबाई सेविका सहित विद्यालय के ३२ छात्र-छात्रायें भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर सभा प्रधान जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हमें आगामी तीन साल में सभा बाड़ा लवन में बाड़ा का बरामदा जो कि ७५ वर्ग फुट लम्बा और ८ वर्ग फुट चौड़ा कबेलू को हटाकर पक्का छत बनाना है, सामने खलिहान जो ५० डि.मी. जमीन है उसे खेल मैदान के रुप में सुसज्जित करना है, गौठान की हिफाजत करनी है, हाईस्कूल से हायर सेकेण्डरी स्कूल स्तर पर स्तरोन्नत करना है। उन्होंने बताया कि १३० एकड़ जमीन से लगभग १२ लाख रुपये का फसल उत्पादन से प्राप्त हो रहा है। कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

-लवन से लौटकर मंत्री दीनानाथ वर्मा

हमें सही रास्ते पर चलकर सत्कर्म, सद्‌धर्म हेतु आगे बढ़ना है - आचार्य अंशुदेव आर्य

दुर्ग। आर्यसमाज मठपारा दुर्ग के स्वामी श्रद्धानन्द सभा भवन में छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों का स्वागत, सम्मान किया गया, जहां पर निर्वाचन में प्रचण्ड बहुमत से विजयश्री प्राप्त कर सभा के द्वितीयवार चयनित सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, उपप्रधान श्री दयाराम वर्मा, कार्यलय मंत्री व मुख्य अधिष्ठाता श्री दिलीप आर्य, उपमंत्री चतुर्भुज आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री विनोदबिहारी सक्सेना जी उपस्थित रहे। इस अवसर पर सभा प्रधान ने आर्य समाज के अधिकारी व सदस्यों को सम्बोधित करते हुये कहा कि जनता ने, प्रतिनिधियों ने मुझे दुबारा अवसर प्रदान किया है, इसका अभिप्राय जनता ने एक वृहन्तम् कार्यभार सौंपा है, हमें वृहत् संगठन के साथ-साथ सामाजिक गतिविधियों को सुचारु रुप से संचालन करना है। उन्होने कहा कि हमें मिलजुलकर संगठित होकर वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करना है, अगर हम सत्कर्म करते हैं, धर्म के मार्ग पर चलते हैं तो धर्म हमारी रक्षा करता है और हम सही रास्ते पर चलकर हमेशा विजयी होते हैं, इसलिए सत्कर्म, सद्‌धर्म हेतु आगे बढ़ना है। इस अवसर पर आर्यसमाज के उपाध्यक्ष श्री हरीश बंसल ने हम लोग महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर चलने का प्रयास कर रहे हैं और उनके स्वप्नों को साकार करने के दिशा में प्रयत्नशील है। उन्होंने समारोह में उपस्थित पदाधिकारियों का धन्यवाद किया और दृढ़ संकल्पित होकर कार्य करने को दिशा प्रदान की। आचार्य लोकनाथ शास्त्री के द्वारा शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया।

संवाददाता : लोकनाथ शास्त्री आर्यसमाज मठपारा दुर्ग

आर्यसमाज कांसा द्वारा तीर्थ यात्रा एवं दीपावली पर्व मनाया गया

कांसा । आर्यसमाज कांसा के लोगों के मन में गुरुकुलीय परम्पराओं से परिचय कराने के लिये अनेक गांव से चुने हुये ११६ लोगों को २४-२५ अक्टूबर २०१५ को द्विदिवसीय तीर्थ यात्रा पर लेकर गया था। इस यात्रा में लोगों ने तीन गुरुकुलों (१) गुरुकुल आश्रम आमसेना (२) गुरुकुल हरिपुर (३) गुरुकुल नरसिंहनाथ एवं पतोरा डेम नरसिंहनाथ तथा हरिशंकर में पर्वतों एवं झरनों का दर्शन कराया गया। इसी प्रकार दीपावली पर्व के अवसर पर आर्यसमाज कांसा की ओर से बहुत सन्दर व शिक्षाप्रद कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें दीपावली के पूर्व दिवस में २.३० बजे रंगोली प्रतियोगिता का कार्यक्रम रखा गया, इसमें २६ बेटियों ने भाग लिया। बेटियों ने बनाये सुन्दर व आकर्षक रंगोलियों को देखकर दर्शकों ने खूब सराहा। इस प्रतियोगिता में ऋचा साहू, प्रथम, लवली चन्द्रा द्वितीय एवं मुगलेश्वर बरठे ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इनके अतिरिक्त सभी बेटियों को सांत्वना पुरस्कार देकर सबका उत्साहवर्धन किया।

इसके बाद रात्रि ८ बजे कवि सम्मेलन का कार्यक्रम हुआ, जिसमें ८ कवियों श्री बरसईत दास महंत, आचार्य रणवीर आर्य एवं शुकदेव प्रसाद वर्मा (कांसा), पुनीराम चन्द्रा (डभरा), रामनाथ साहू (देवरघटा), नीलाम्बर पटेल (सरवानि), मनिहार सिंह बंजारे एवं सत्यनारायण बरेठ (कटेकोनी खुर्द) ने अपना कवितापाठ किया। कवियों ने हास्य व व्यंग्य कविताओं से श्रोताओं की खूब वाह-वाही लूटी। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने की।

अगले दिन ११ नवंबर २०१५ को दीपावली पर्व प्रातः ११.३० बजे तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अंशुदेव आर्य थे। उन्होंने अपने प्रवचन में बताया कि दीपावली का प्राचीन नाम शारदीय नवसस्येष्टि है। जिसमें ईश्वर प्रदत्त नये अन्नों का यज्ञ में आहुति देकर ईश्वर का आभार या धन्यवाद व्यक्त किया जाता है। इसी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने शरीर का त्याग किया, जो कि आर्यसमाज के लिए बहुत ही स्मरणीय व प्रेरणीय दिवस बन गया है। ***संवाददाता : आचार्य रणवीर आर्य, कांसा***

गुरुकुल आश्रम आमसेना का गौरव

आमसेना (उड़ीसा)। प्रसिद्ध आर्य सन्यासी पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के अनथक परिश्रम एवं तप, त्याग से अब आर्यसमाज के गुरुकुलों में गुरुकुल आश्रम आमसेना का प्रमुख स्थान है। इस गुरुकुल के छात्रों के सर्वविध विकास के लिए विशेष प्रयत्न किया जाता है। फलस्वरुप यहां के ब्रह्मचारी बौद्धिक एवं शारीरिक विकास में आगे रहते हैं। ओड़िशा के प्रान्तीय कुश्ती दंगल में गुरुकुल के तीन ब्रह्मचारी ब्र. लोकेश्वर आर्य एवं ब्र. हृषिकेश आर्य ने ६५ कि.ग्राम. वजन में क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया ब्र. बलदेव आर्य ७५ कि.ग्रा. वजन में तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की ओर से ओड़िशा प्रान्तीय शास्त्र प्रतियोगिता पुरी में आयोजित प्रतियोगिता में महाभाष्य में ब्र. स्वराज आर्य, धातुरुप में ब्र. मित्रभानु आर्य अष्टाध्यायी कण्ठस्थीकरण में ब्र. रुपेश आर्य ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार इस शास्त्र प्रतियोगिता में गुरुकुल के होनहार तीनों ब्रह्मचारियों ने प्रथम स्थान प्राप्त करके गुरुकुल का गौरव बढ़ाया है। ***संवाददाता : आ. मनुदेव स्वामी, प्रबंधक आमसेना***

विदेशी मत में गये २५६ ईसाईयों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

ओड़िसा एवं झारखण्ड के सीमावर्ती आदिवासी बहुल सुन्दरगढ़ जिले के इन्दरपुर गांव में २५६ ईसाई स्त्री पुरुषों ने यज्ञ में आहुति देकर विधिपूर्वक वैदिक धर्म को ग्रहण किया यह कार्यक्र उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती एवं पं. विसिकेशन जी शास्त्री ने सम्पन्न किराया। इस अवसर पर आसपास के हजारों श्रद्धालु जन इन्हें आशीर्वाद देने पधारे। **संवाददाता : आ. रणजीत विवित्सु,**

गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ में स्नातक सम्मेलन सम्पन्न

मेरठ। गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के कुलाधिपति तपोनिष्ठ पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी के सत्प्रेरणा तथा स्नातक परिषद के सौजन्य से गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ में दिनांक २१ व २२ अक्टूबर २०१५ सको १९७० से २०१५ तक निर्गत स्नातकों का विराट सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस बार स्नातक सम्मेलन की अनोखी छटा देखने को मिली, जिसमें स्नातक-परिचय, वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित प्रश्नोत्तरी, बौद्धिक मंथन, काव्य विलास, छात्र-स्नातक संवाद तथा ब्रह्मचारियों की विभिन्न प्रतियोगिताएं संन्निहित थीं। देश के कोने-कोने से पधारे स्नातकों में भ्रातृत्व का अपूर्व उदाहरण दृष्टिगोचर हुआ। इस पावन अवसर पर वेद एवं ब्राह्मण ग्रंथों के मर्मज्ञ स्वामी जी महाराज ने ऋग्वेद के संगठन सूक्त की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए समस्त स्नातकों को **संगच्छध्वम्** के मूल मंत्र से अनुप्रणित होकर अपने जीवन को सफल बनाने का आशीर्वाद प्रदान किया। इस वर्ष के स्नातक परिषद के संयोजक भाई कर्मवीर जी ने सभी का आभार प्रकट किया और आगामी सम्मेलन की सूचना दी। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की गई। **संवाददाता : आ. प्रेमप्रकाश शास्त्री**

"योग से व्यसन की मुक्ति" गोष्ठी सम्पन्न

दुर्ग। डी.ए.व्ही. मॉडल हा.से. स्कूल के प्रांगण में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, श्री वेदप्रकाश शर्मा, पुष्पलता शर्मा, समिति के अध्यक्ष श्री हरीश बंसल, श्री दिलीप आर्य कार्यालय मंत्री उपस्थित थे। गोष्ठी के मुख्य वक्ता श्री वेदप्रकाश शर्मा जी ने प्राणायाम, अनुलोम-विलोम व अन्य क्रियाओं से व्यसन से मुक्ति कैसे हो पर प्रकाश डाला एवं छात्र-छात्राओं को व्यसन न करने की हिदायत दी। श्रीमती पुष्पलता शर्मा ने बताया कि हमने मालवा में महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को प्रतिपादित करने हेतु आदिवासी क्षेत्रों में कार्य किया है एवं नशा व अन्य व्यसनों से मुक्ति के लिए लोगों को जागरुक किया। संस्था के अध्यक्ष श्री हरीश बंसल ने अपने उद्बोधन में कहा कि संपूर्ण भारत में शराब बंदी की जानी चाहिए। उच्चपदों पर बैठे अधिकारियों द्वारा अपनी सुविधा व ७५% वेतन सरकार के खाते में समायोजित कर दिया जाय तो देश व प्रदेश में शराबबंदी से होने वाली क्षतिपूर्ति की जा सकेगी। अंत में सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी ने छात्र-छात्राओं व शिक्षक-शिक्षिकाओं के अनुशासन की प्रशंसा करते हुये कार्यक्रम को सफल बनाने शाला प्रबंधन को हार्दिक शुभकामनायें दी। भविष्य में इस प्रकार के कार्यक्रमों को व्यसनपूर्ण क्षेत्रों में किए जाने की सलाह दी गयी।

संवाददाता : डी.ए.व्ही. हायर सेके. स्कूल दुर्ग

मॉरीशस के राष्ट्रपति से आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री की भेंट

दिल्ली। प्रख्यात वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने मारीशस के राष्ट्रपति से भेंट के दौरान उन्हें अपना साहित्य भेंट करते हुए महर्षि दयानन्द की उस सद् इच्छा की चर्चा की जिसके अनुसार उन्होंने महिलाओं को समान अधिकार, शिक्षा और ज्ञान देने पर बल दिया था। राष्ट्रपति भवन में महामहिम अमीना गरीब फकीम से शिष्टाचार भेंट के दौरान अध्यात्म पथ के सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने राष्ट्रपति महोदया के आयुर्वेद पर किये गये उल्लेखनीय कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुये उनके और मारीशस वासियों के सुखद जीवन की कामना की।

ज्ञात हो राष्ट्रपति महोदया सुयोग्य लेखिका एवं अत्यन्त मृदुभाषी एवं विनम्र है। उन्होंने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री को लेखक होने के नाते अपना स्वाभाविक सहयोगी बताया और उन्हें मारीशस भारत मैत्री को सुदृढ़ करने की शुभकामना दी। इस अवसर पर आर्यसभा मॉरीशस के महामन्त्री श्री हरिदेव रामधनी, वरिष्ठ उपप्रधान श्री बालचन्द तानाकूर, वेदप्रचार समिति के महामन्त्री पं. श्याम दयाबू आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

संवाददाता : सूर्यकान्त मिश्र, सहसम्पादक अध्यात्म पथ

श्रद्धाञ्जलि

मनेन्द्रगढ़। आर्यसमाज मनेन्द्रगढ़ के प्रधान की पूजनीया माताजी श्रीमती रुक्मणी विश्वकर्मा की लम्बी आयु ९५ वर्ष की अवस्था में निधन दिनांक २१-१०-२०१५ को हो गया। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई। उनका अंतिम संस्कार में श्री गोपाल विश्वकर्मा, राजकुमार वर्मा, अनिल वर्मा व आर्यसमाज पार्वतीपुर, मनेन्द्रगढ़ एवं नगर के पदाधिकारीगण व उस क्षेत्र के गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारीगण व अंतरंग सदस्य तथा अग्निदूत परिवार दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करती है।

युवा चेतना शिविर

दिनांक २३ से २७ दिसम्बर २०१५

स्थान : आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी

पो. पचेड़ा, जिला महासमुन्द (छ.ग.)

: पंजीयन की अंतिम तिथि :

२० दिसम्बर २०१५

निवेदक : आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।**

अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं। **- दीनानाथ वर्मा, मंत्री** मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

'योग से व्यसन की मुक्ति' अभियान के तहत छत्तीसगढ़ में वेदप्रकाश शर्मा साथ में सभा के पदाधिकारीगण डी.ए.व्ही. मॉडल हा.से. स्कूल दुर्ग में

दिसम्बर 2015
डाक पंजी. छ.ग./ दुर्ग संभाग / 99 / 2015-17
CHH-HIN/2006/17407

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग –491001 (छ.ग.)

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में.
श्रीम सदस्य
0001

॥ ओ३म् ॥

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
आर्यसमाज टाटीबन्ध, महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय
रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम जी.ई. रोड, रायपुर में

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह एवं आर्यसमाज टाटीबन्ध व
महर्षि दयानन्द आर्य. उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध का वार्षिकोत्सव

आमंत्रण

दिनांक २१, २२ एवं २३ दिसम्बर २०१५
(सोमवार, मंगलवार एवं बुधवार)

आमंत्रण

आमंत्रित विद्वान्

पं. सत्यपाल सरल,
वैदिक भजनोपदेशक देहरादून
आचार्य कर्मवीर शास्त्री,
सम्पादक, 'अग्निदूत' सभा मुख पत्र
आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री, रायपुर
आचार्य शिवशंकर शास्त्री, रायपुर
श्रीमती गीता आर्या, बाल्कोनगर कारबा
आचार्य रजनीकान्त शुक्ल, रायपुर
पं. संजय शास्त्री, रायपुर

यज्ञ के ब्रह्मा
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय
आर्य प्रतिनिधि सभा

-: कार्यक्रम :-

दिनांक 21 एवं 22 दिसम्बर 2015
प्रातः 8 से 11 बजे एवं अपरान्ह 2 से 5 बजे
यज्ञ, भजन, प्रवचन

दिनांक 23 दिसम्बर 2015
प्रातः 8 से 11 बजे - यज्ञ, भजन, प्रवचन
पूर्वान्ह 11.30 - पूर्णाहुति
अपरान्ह 12.30 बजे - ऋषिलंगर

निवेदक : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज टाटीबन्ध महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर

-: संपर्क सूत्र :-
दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री (मो. 9826363578), दिलीप आर्य कार्यालय मंत्री (मो. 9630801257),
सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव प्रधान आर्यसमाज टाटीबन्ध (मो. 9300487016),लोकनाथ आर्य प्रबंधक दयानन्द सेवाश्रम (मो. 8103895537)

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.